 ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

चेत्र-वैसाख, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ७ अंक ८ अप्रैल 2014

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**



फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥ सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥
तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥१॥
डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥ डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥१॥रहाउ॥
ना जीउ मरै न डूबै तरै ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥
हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥ आगै पाछै हुकमि समाइ ॥२॥
हंसु हेतु आसा असमानु ॥ तिसु विचि भूख बहुतु नै सानु ॥
भउ खाणा पीणा आधारु ॥ विणु खाधे मरि होहि गवार ॥३॥
जिस का कोइ कोई कोइ कोइ ॥ सभु को तेरा तूं सभना का सोइ ॥
जा के जीअ जंत धनु मालु ॥ नानक आखणु बिखमु बीचारु ॥४॥ *(पन्ना १५१)*

गउड़ी राग में उच्चारण किए गए उक्त शबद में श्री गुरु नानक देव जी फरमान कर रहे हैं कि प्रभु के भय में रहने से वो आत्मिक अवस्था बन जाती है जहां मन प्रभु-चरणों में जुड़ा रहता है। जिसके हृदय-घर में प्रभु का भय बस जाता है उसे विश्वास हो जाता है कि प्रभु उसके हृदय में ही निवास करता है। इस दशा में शेष सारे (सांसारिक) भय स्वत: ही दूर हो जाते हैं। प्रभु का भय होते हुए अन्य भय का हृदय में टिकना नामुमकिन हो जाता है। हे प्रभु! तुम्हारे बिना जीव का कोई अन्य स्थान-आश्रय नहीं है। संसार में जो भी घटित हो रहा है सब तुम्हारी रज़ा में ही हो रहा है। यदि जीव के हृदय में कोई अन्य (सांसारिक) भय हो तो जीव हर दम घबराया हुआ रहता है तथा यही उसके अन्य भय में होने की निशानी है।

गुरु जी का आगे कथन है कि प्रभु-भय में रहते हुए न जीव मरता है, न डूबता है और न ही तैरता है। कहने से तात्पर्य कि अन्य भय वाले जीव सांसारिक रसों आदि में डूबते हुए, बेगैरत होकर हर रोज़ मरते हैं। जिस प्रभु ने जगत की रचना की है वही सब कुछ कर रहा है। जीव उसी प्रभु के हुक्म में जन्म लेता है और उसी के हुक्म में मरता है। लोक-परलोक में भी जीव को प्रभु के हुक्म में ही स्थिर रहना पड़ता है। जिस जीव के हृदय में प्रभु का भय नहीं उसके हृदय में निर्दयता है, अहं है; उसके हृदय में तृष्णा की नदी उफान पर होती है। प्रभु-भय ही आत्मिक जीवन की खुराक है, आधार है। जो लोग प्रभु-भय की यह खुराक नहीं लेते वे सांसारिक भय में पागल हुए रहते हैं।

अंतिम पंक्तियों में गुरु जी का फरमान है कि प्रभु-भय में रहते हुए यह समझ आ जाती है कि दुनिया में रहते हुए कोई सदा के लिए साथी, सहायक नहीं बन सकता। सदा के लिए, पक्का साथी, सहायक केवल प्रभु ही है। वही सबकी संभाल करने वाला है, इसलिए उसी से प्रेम करना चाहिए, उसी का भय लेना चाहिए। जिस प्रभु ने ये सारे जीव-जंतु पैदा किए हुए हैं, उसी द्वारा ये सब धन-पदार्थ निर्मित किए हुए हैं। इससे भी बढ़कर यह विचार करना और कहना कठिन है कि प्रभु अपने पैदा किए जीवों की कैसे संभाल करता है अर्थात् इतने बड़े जगत को संभालना कोई साधारण बात नहीं है। यह संभाल केवल परमात्मा ही कर सकता है। ☸



असुर सिंघारबे को दुरजन के मारबे को संकट निवारबे को खालसा बनायो है

वैसाख का महीना शिशिर की विरानी के बाद समूची वनस्पति में नयी जीवन-रौ लेकर आता है। समस्त कायनात में मुग्ध कर देने वाली सुगंधियां रुमकने लगती हैं। वैसाख महीने की संक्रांति वाले दिन को प्राचीन काल से ही भारत में त्योहार के रूप में मनाया जाता आ रहा है। सिक्ख जगत में इसका विशेष महत्त्व है। सिक्ख इस दिन को खालसे के जन्म दिन के रूप में मनाते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस दिन 'गुर संगति कीनी खालसा' के संकल्प को मूर्तिमान किया था।

श्री गुरु नानक देव जी का मनोरथ ऐसे सर्वगुण-सम्पन्न आदर्शक मनुष्य की सृजना करना था जो जीवन के वास्तविक मनोरथ को समझकर समूची मानवता के लिए कल्याणकारी बने। श्री गुरु नानक देव जी ने जिस निर्मल पंथ के महल की नींव रखी, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना से उसे संपूर्ण कर दिया। श्री गुरु नानक देव जी की शर्त थी कि इस मार्ग पर चलने के लिए शीश हथेली पर रखना पड़ता है-- *"इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि ना कीजै ॥"* श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसी कार्य को सिरों की मांग से पूर्णता बख़्शी। सिर हथेली पर रखकर आए पांच प्यारों को दशम पातशाह ने यह कहकर निवाजा :

मै आपना सुत तोहि निवाजा ॥
पंथु प्रचरु करबे कहु साजा ॥
जाहि तहां तै धरमु चलाइ ॥
कबुधि करन ते लोक हटाइ ॥

'खालसा' शब्द अरबी भाषा का है जिससे आशय है- पाक, पवित्र, बिना किसी खोट के तथा वह ज़मीन जो सीधी बादशाह की मलकियत हो। सिक्ख सिद्धांत के अनुसार खालसा वह है जो सीधा अकाल पुरख के साथ सम्बंधित हो इसलिए उसको किसी मध्यस्थ की ज़रूरत नहीं। डॉ. गोकुल चंद नारंग के अनुसार - "यह उसी इस्पात की तेग थी, जिस आचार रूपी कच्चे लोहे को पहले नौ गुरु साहिबान ने खूब तपाया, कमाया तथा संवारा था। खालसे के लिए मर्यादा का पाबंद होना आवश्यक करार दिया गया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अनुसार :

जागति जोति जपै निसि बासुर,
एकु बिना मनि नैक न आनै।
पूरन प्रेम प्रतीति सजै,
ब्रत गोर मढ़ी मठ भूल न मानै ॥
तीरथ दान दया तप संजम,
एक बिनां नह एक पछानै ॥
पूरन जोति जगै घट मै,
तब खालिस ताहिं न खालिस जानै ॥

हक-सच पर मिटने वाले मनुष्य का निडर होना आवश्यक है। सच के लिए मरने की

तड़प हो, परमावश्यक है। इस तड़प को पैदा करने के लिए पहले जिस्म में जान पैदा करना आवश्यक है। इस कार्य के लिए गुरु जी ने सिक्खों के लिए खंडे की पाहुल तैयार की जिससे मुर्दा शरीरों में नयी ताकत आ गयी। सिक्खों को सुंदर जवां मर्दों वाला स्वरूप देकर संत-सिपाही बना दिया। स. रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार :

अब सिखन रूप पलटाईऐ।
तेजधारी जिस लख भौ खाईऐ।
तेज नाम कोउ इनैं धरय्यै।
कर पाहुल इन्हे तेज पिलय्यै।

खालसा जुल्म के विरुद्ध खड़ा हो गया। एक तूफान उठ खड़ा हुआ, जिसके आगे बड़े-बड़े जाबर भी टिक न पाए। ऐसी बिजली चमकी जिससे झूठ, अन्याय तथा जुल्म जलकर राख हो गया। यह पंथ जुल्म के विरुद्ध जूझता हुआ शहीदों का पंथ बन गया।

दुनिया ने प्रत्यक्ष देखा कि खालसा ने गुरु जी के उपदेश पर पहरा देते हुए, उनके द्वारा बख़्शी अटूट शक्ति के भंडार का प्रयोग करते हुए सदियों से इस देश में पांव जमाए बैठे जालिम साम्राज्य की जड़ें उखाड़ दीं। देश की इज्जत-आबरू लूटने वाले विदेशी हमलावरों का सदा के लिए भारत में प्रवेश बंद कर दिया। इसके उपरांत न अस्त होने वाले अंग्रेजी साम्राज्य की गुलामी की ज़ंजीरें काटने के लिए ८० प्रतिशत से ज्यादा कुर्बानियां पंजाबियों ने दीं।

भाई मनी सिंघ जी को जब बंद-बंद काटकर शहीद करने की सुनाई गई तो भाई साहिब ने सिक्ख संगत के आगे बिनती की कि मुझे शहीद होने या बंद-बंद काटे जाने का कोई डर नहीं। शहादत तो भाग्यशाली लोगों को नसीब होती है। मेरे लिए तो संगत यही अरदास करे कि मेरी सिक्खी साबत रहे। मेरी सिक्खी में कोई बाधा न आए, मेरा सिक्खी सिदक कायम रहे। स. रतन सिंघ (भंगू) 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

संगत बचन हमहि सिर धरयो।
सो मैं चाहीए अब बर करयो।
मेरी सिक्खी साबत रहै।
बंद बंद काटत नहि दुख अहै।
सिक्खी मैं किछु भंग न पवै।
देह सीस तुरकन सिर भवै।
देह कटन मैं दुक्ख न मानों।
सिक्खी रहै मैं वड सुक्ख जानो।

वैसाख का दिवस हर वर्ष हमारे लिए इम्तिहान का दिन होता है। यह दिन हमारे अपने अंतर झांकने के लिए है। यह अपने अंदर खालसाई गुण भरने का दिन है। हमें अपना अंदर झकझोरने की ज़रूरत है कि हम मात्र बाहरी रूप में ही नहीं बल्कि अंदर से कितने गुरु के नज़दीक हुए हैं अथवा कितने दूर। क्या हम गुरु को आपा समपर्ण कर चुके हैं? अगर नहीं तो क्यों नहीं ?

आज हमें अपने न्यारेपन को, जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को बख़्शिश किया है, समय की आंधी-तूफानों में कैसे सलामत रखना है? सबसे बड़ी चुनौती हमारे सामने 'बिपरन की रीत' में मिश्रित होने से बचना है ताकि दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हम पर अपनी प्रतीत बनाए रखें।



श्री गुरु अंगद देव जी : बाणी एवं विचारधारा

-डॉ. जगजीत कौर*

होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥
नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिकिओनु ॥
(पन्ना ९६७)

भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी रामकली की वार में आदि गुरु श्री गुरु नानक देव जी द्वारा ऐसा चमत्कार करने का ज़िक्र करते हैं जो संसार भर की हदों को पार कर सम्पूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित कर गया। यह अद्वितीय करिश्मा था अपने ही शिष्य के आगे शीश झुका, उसे गुरु-पद प्रदान कर गुरु-पदवी का मान प्रतिष्ठित करना। भाई लहिणा जी गुरु-चरणों से जुड़, सेवा कर मिसालें पेश करते रहे।

भाई लहिणा जी से श्री गुरु अंगद देव जी बनने की वार्ता भी अत्यंत विचित्र है। भाई लहिणा जी का जन्म ज़िला श्री मुकतसर साहिब के ग्राम सराय नागा (मत्ते दी सरां) में भाई फेरूमल जी के गृह माता दइआ कौर जी की कोख से हुआ। पिता समय की तथाकथित जाति के अनुसार त्रेहन खत्री कुल के अच्छे व्यापारी थे, जो व्यापार के सिलसिले में ही सराय नागा गांव के उजड़ जाने पर गांव संघर कोट निवास कर खडूर साहिब व्यापार करने लगे थे। स्वभाव से माता-पिता दोनों अति धर्मात्मा देवी के पुजारी थे। भाई लहिणा जी पर भी इसका प्रभाव पड़ा। काफी समय तक युवा भाई लहिणा जी पिता के समान ही संग लेकर देवी-दर्शन को जाया करते थे। कंठ अत्यंत सुरीला था। मधुर कंठ से आत्मविभोर हो देवी की भेंटें गाया करते थे। एक बार रात जगराते से लौटते हुए संघर कोट एक छोटे-से तालाब के किनारे बैठ गए। वहीं संघर कोट निवासी भाई जोध जी अति मधुर स्वर में *'आसा की वार'* का पठन-गायन कर रहे थे। बाणी का ऐसा प्रभाव भाई लहिणा जी के मन पर पड़ा कि भाई जोध जी से पूछने पर और विदित होने पर बाणी के रचयिता श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन को लालायित हो उठे। वार्षिक नियमानुसार संग लेकर जब जा रहे थे तो घर से ही मन बनाकर चले कि गुरु-दर्शन करके ही लौटेंगे। संग को निकट स्थान पर छोड़ करतारपुर की ओर चल पड़े। घोड़े पर सवार, मार्ग-खेतों में एक 'कृषक' को खेती-कर्म करते देखा, पूछा, "भाई! श्री गुरु नानक देव जी का घर बता सकते हो?" 'कृषक' ने सिर पर घास की गांठ रखी, घोड़ी की लगाम पकड़ सवार भाई लहिणा जी को घर तक ले आए, कहा, "यही है 'नानक' का घर।" घास की गांठ घर के आंगन में रख, हाथ-पैर धो, हाथ जोड़ स्वागत करते हुए खड़े हो गए, "आओ जी, मैं ही नानक हूं।" भाई लहिणा जी स्तब्ध, हैरान, परेशान; नेत्र सजल हो उठे। "ओहो! कितनी बड़ी भूल हो गई! खुद घोड़ी पर चढ़कर आये और गुरु जी को लगाम पकड़ाई!" हाथ जोड़, विनम्र गुरु-चरणों की ओर झुके। श्री गुरु नानक देव जी ने कंधों से पकड़ लिया-- "पुरखा नां की ए? कित्थों आए हो?" "जी संघर कोट पिंड तों आए हां। नां है लहिणा।" "लो

*१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६

भाई, फिर तो ठीक ही होइआ, तुसां लैणा ते असां देणा। लैण वाले घोड़ीआं 'ते चढ़ के ही आंवदे ने।" संध्या काल में सोदरु रहरासि हुई। संगत जुड़ी। लंगर तैयार हुआ। सभी ने सेवा में भाग लिया। भाई लहिणा जी नूरी कशिश वाले गुरुदेव जी के मधुर प्रवचन सुन ऐसे प्रभावित हुए कि वहीं टिक गए। संग को वापिस लौट जाने का संदेश भेजा। स्वयं गुरु जी के होकर रह गए। करतारपुर नगर में शबद-गायन, प्रात: आसा की वार, सायं सोदरु रहरासि, नियमावली से इतने अभिभूत हुए कि श्री गुरु नानक देव जी की सेवा में ही जुटे रहे। सन् १५३९ में श्री गुरु नानक देव जी ने बाबा बुड्ढा जी से सारी रस्में पूरी करवा भाई लहिणा जी को अंग-संग लगा, 'अंगद' नाम दे गुरु-पद पर प्रतिष्ठित किया। भाई लहिणा जी को गुरु-पद देकर श्री गुरु नानक देव जी ने एक सुदृढ़ संगठन की नींव रखी। इतिहासकार ट्रंप बताता है कि "श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन-काल में ही अग्रिम गुरु स्थापित कर दूरंदेशी और योजना-बद्धता का परिचय दिया।"

श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी में उस उचित योग्यता को भांप लिया था जो समय की प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने की शक्ति-सामर्थ्य रखती थी। श्री गुरु नानक देव जी का मत नवोदित मत था। श्री गुरु नानक देव जी का मत किरती (मिहनती, श्रमिक) सिक्खों का था। ऐसे में गुरु जी को एक ऐसे उत्तराधिकारी की आवश्यकता थी जो सहज, संयमित, शांत, विवेक-बुद्धि, धैर्यवान व्यक्तित्व हो, जिसमें अपूर्व संगठन-शक्ति हो, जो धुर की बाणी, सिक्खी आदर्शों और सिद्धांतों की न केवल रक्षा कर सके बल्कि इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार भी कर सके। श्री गुरु अंगद देव जी में यह अपूर्व सामर्थ्य था। भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी की वार के शब्द हैं :

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥
लहणे धरिओनु छत्रु सिरि करि सिफती अंम्रितु पीवदै ॥
मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥
गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥ *(पन्ना ९६६)*

श्री गुरु नानक देव जी ने जिस धर्म-राज्य की प्रतिष्ठा की उसकी नींव सत्य पर रखी। उसमें सत्य-धर्म के किले निर्मित किए गए। सत्य-धर्म का छत्र श्री गुरु अंगद देव जी के शीश पर झुलाया गया। आदेश दिया-- "एक अकाल पुरख जी की सिफतो-सलाह का अमृत-रस-पान करना है। आत्म-तत्त्व को समझना है। गुरु-मति को धारण करना है। ज्ञान-विवेक की खड़ग के ज़ोर पर धर्म-मार्ग को चलाना है। गुरु और चेले, शबद और सुरति के मेल से परमात्मा की प्रशंसा करनी है। सिक्ख-सेवकों के मेल, संगत रूप में सिक्ख मत को सलामत, चिरस्थायी रखना है। सतिगुरु जी ने खडूर साहिब में निवास कर वही नियम, नित्तनेम प्रचलित किया जैसा करतारपुर में था। रात्रि के पिछले पहर गुरुदेव उठते, स्नान आदि से निवृत्त हो नाम-सिमरन में लीन रहते। दिन चढ़े संगत जुड़ती। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का पाठ-गायन होता-- *"लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥"* शबद ही सिक्ख का मार्गदर्शक है, अन्य किसी मध्यस्थ की ज़रूरत नहीं है। बाणी को शुद्ध रूप में सुरक्षित रखा गया। इस दृष्टि से श्री गुरु अंगद देव जी पूर्ण सतर्क थे। पुरोहितवाद से संगत को बचाया

गया। बाणी का अधिक से अधिक प्रचार हो, इसलिए गुरुदेव ने गुरमुखी लिपि को तकनीकी तरतीब प्रदान की। यद्यपि पंजाबी भाषा श्री गुरु नानक देव जी के पूर्व काल में पंजाब में बोली जाती थी, परंतु इसका साहित्यिक स्वरूप लिखित नहीं था। लिखत रूप में इसे लंडे, महाजनी अथवा टाकरी करके जाना जाता था, जिसमें समय के खत्री-व्यापारी हिसाब-किताब रखते थे। इसमें २७ अक्षर होते थे। मुसलमान अरबी-फारसी लिखते-बोलते थे। यही सरकारी भाषा थी। हिंदुओं की भाषा का निश्चित स्वरूप नहीं था। बोलते वे खत्री भाषा थे, मगर उनके धर्म-ग्रंथ संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि में थे। श्री गुरु नानक देव जी ने जनमानस की भाषा पंजाबी में रूहानी बाणी की रचना की। श्री गुरु अंगद देव जी ने इसे गुरमुखी लिपि प्रदान की। श्री गुरु नानक देव जी ने आसा राग में ३५ अक्षरों वाली 'पटी' बाणी उच्चारण की। श्री गुरु अंगद देव जी ने ३५ अक्षर, १० मात्रा तथा तीन और मात्रा-चिन्ह देकर पंजाबी भाषा-गुरमुखी लिपि को तकनीकी स्वरूप प्रदान किया। संसार भर की भाषाओं के खोजी विद्वान, भाषा-विज्ञानी ग्रियर्सन का विचार सही है कि "पंजाबी, भाषा रूप में श्री गुरु नानक देव जी के समय में विकसित हुई। श्री गुरु अंगद देव जी ने अक्षरों में स्वर और मात्रा-चिन्ह जोड़कर, एक निश्चित तकनीक देकर, इसका परिष्कार कर गुरमुख से उद्भूत गुरमुखी लिपि बनाया।"

श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि में गुरबाणी के गुटके (पोथी) तैयार किए; गुरमुखी अक्षर-बोध के लिए बाल-बोध कायदे तैयार किए। गुरु जी उत्साही प्रचारक थे और इस उत्साह में उनकी सुपत्नी माता खीवी जी साथ देती थीं। माता खीवी जी उत्साह से लंगर चलाती थीं और गुरमति प्रचार में भी पूरा सहयोग देती थीं। गुरु साहिब ने टकसालें और धर्मशालाएं भी स्थापित कीं, जहां संगत जुड़ती। गुरबाणी-शबद-गायन होता और गुरमुखी शिक्षा का ज्ञान भी दिया जाता। गुरु साहिब और माता खीवी जी दोनों बच्चों को शिक्षा देते। आम सिक्ख श्रद्धालुओं में गुरबाणी के गुटके बांटे जाते। कहा जाता है कि गुरु साहिब ने श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-वृत्तांत 'जन्म-साखी' रूप में लिखवाया और इस प्रकार पंजाबी साहित्य रचना की नींव डाली। यद्यपि इस पुरातन जन्म-साखी को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं किंतु यह तो मानना ही पड़ेगा कि जन्म-साखी के लेखन से पंजाबी भाषा व गुरमुखी लिपि में गद्य साहित्य-लेखन का सूत्रपात हुआ। यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है कि शबद-कीर्तन, गुरबाणी-पठन-गायन, जन्म-साखी के पठन-श्रवण से संगत जुड़ती गई, सिक्खों का एक शक्तिशाली समूह गठित होता गया, जिसने भविष्य में एक सांझी इकाई के रूप में पंथ, कौम और संगठन का स्वरूप ग्रहण किया। इतिहासकार प्रिं. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ का विचार है कि "इस प्रकार लगभग १३१ संगतें अलग-अलग स्थानों पर जुड़ती रहीं, जहां सिक्ख श्रद्धालु मिल-बैठकर अध्यात्म-चिंतन करते, प्यार-भावना में जुड़ते, बाणी का अध्ययन करते।"

श्री गुरु अंगद देव जी श्री गुरु नानक देव जी का बहुत सत्कार करते थे। उनके आदर्शों, सिद्धांतों का पालन करना ही उनका जीवन-मनोरथ था। उनके द्वारा रचित बाणी के ६३ सलोक हैं जो पंचम गुरुदेव जी ने विभिन्न वारों के साथ 'महला २' शीर्षक से संकलित किए हैं। इन सलोकों का विवरण इस प्रकार है:-- सिरी राग की वार में २ सलोक, माझ की वार में

१२ सलोक, आसा की वार में १५ सलोक, सोरठि की वार में १ सलोक, सूही की वार में ११ सकोक, रामकली की वार में ७ सलोक, मारू की वार में १ सलोक, सारंग की वार में ९ सलोक, मलार की वार में ५ सलोक। काव्यात्मक दृष्टि से सूत्रात्मक शैली में रचे गए ये सलोक गहन-गंभीर भाव-गरिमा-पूरित हैं और मानवीय जीवन में प्रतिदिन प्रयोग में आने वाले मुहावरों, लोकोक्तिओं की तरह बोले व प्रयोग किए जाते हैं। श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा उच्चरित बाणी सभी मूल सिद्धांतों को समाहित किए हुए है, जैसे समस्त सृष्टि का कर्त्ता एक अकाल पुरख है जो सर्वशक्तिमान, प्रकाश-पुंज, निरंजन, निराकार, ज्ञान-रूप, आत्मस्वरूप है :

--एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥
नानक ता को दासु है सोई निरंजन देव ॥
(पन्ना ४६९)

--जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥
(पन्ना ४६९)

निराकार प्रकाश-पुंज अकाल पुरख के अस्तित्व का ज्ञान गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से होता है। गुरु ज्ञान का स्रोत है जो अज्ञानता के कपाट खोलकर प्रकाश देता है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

मनुष्य के मन के अंदर प्रकाशमान मणियों का भंडार है पर उस पर छत पड़ी है, बज्र कपाट है, ताला पड़ा है, ताले की चाबी गुरु के पास है। गुरु द्वारा बज्र कपाट खोलने पर मणियों के प्रकाश में व्यक्ति परमात्मा को पहचान सकता है :

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥
(पन्ना १२३७)

प्रकाश-पुंज वाहिगुरु से, अंतर के प्रकाश से नाम-सिमरन द्वारा साक्षात्कार होता है, अत: अमृत बेला में उठ शांतचित्त, अति उत्साह, उमंग से प्रभु की प्रशंसा करो :

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥
(पन्ना १४६)

अमृत बेला में अमृत-रस का पान विरला भाग्यशाली ही करता है और जो इस नाम-रस का पान करके इसमें रंग जाते हैं उन्हें अन्य रस स्वादिष्ट नहीं लगते :

जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि ॥
नानक अंम्रितु एकु है दूजा अंम्रितु नाहि ॥
नानक अंम्रितु मनै माहि पाईऐ गुर परसादि ॥
तिन्ही पीता रंग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आदि ॥
(पन्ना १२३८)

जगत में सब कुछ प्रभु-हुक्म से होता है। जीवन-मृत्यु सब प्रभु का हुक्म है :

--हुकम साज हुकमै विचै रखै हुकमै अंदर वेखै ॥ . . .
--जेहा चीरी लिखिआ तेहा हुकमु कमाहि ॥
घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥
(पन्ना १२३९)

प्रभु-प्रेम में पूर्ण समर्पित-भाव का गुरु साहिब उपदेश करते हैं। ऐसा प्रेम मान्य नहीं जो द्वैत-भाव से प्रेरित हो :

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥
(पन्ना ४७४)

समर्पित प्रेम तभी हो सकता है जब मनुष्य हउमै का त्याग करे। साधारणत: मनुष्य के कर्म हउमै से प्रेरित होते हैं--*"हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥"* तब होता यह है--
"सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥"
व्यवहारिक स्तर पर भी हउमै हानिकारक ही सिद्ध होती है :

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
(पन्ना ४७४)

खुशामद और अज्ञानतावश व्यक्ति समाज में अन्यायपूर्ण कार्य करते हैं :

नाउ फकीरै पातिसाहु मूरख पंडितु नाउ ॥
अंधे का नाउ पारखू एवै करे गुआउ ॥
इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥
नानक गुरमुखि जाणीऐ कलि का एहु निआउ ॥
(पन्ना १२८८)

ऐसे अविवेकी अन्यायकर्त्ता ही अंधे हैं, वे नहीं जो वास्तव में नेत्रहीन हैं :

--सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ ॥
नानक हुकमु न बुझई अंधा कहीऐ सोइ ॥
--अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥
अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥
(पन्ना ९५४)

ऐसी चतुराई, चालाकी, जोड़-तोड़ मनुष्य बढ़प्पन, यश पाने को करता है, पर ऐसा बढ़प्पन, यश किस काम का जो अंत में सहायक नहीं होता?

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥
एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥ *(पन्ना १२९०)*

इसीलिए जिन गुरमुखों को यह ज्ञान हो जाता है वे ऐसे मिथ्याचार में नहीं फंसते। वे जान जाते हैं कि जगत में वे मेहमान हैं :

जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥ *(पन्ना ७८७)*
राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥
(पन्ना ९५४)

वे तो गुरु-चरणों से जुड़ केवल नाम-रत्नों का व्यापार करते हैं :

रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥
वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥
जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥
रतना सार न जाणनी अंधे वतहि लोइ ॥
(पन्ना ९५४)

इसलिए जिन जीवात्माओं के हृदय-घर में प्रभु-प्रियतम का निवास होता है, जो परमात्मा की सिफतो-सलाह से जुड़े रहते हैं, उनके लिए सभी दिन, पल, घड़ियां चिरंतन काल के लिए बसंत और सावन ऋतु के दिनों की भांति नित्य सुख और आनंद का स्रोत बनी रहती हैं। वाहिगुरु की याद से बिछुड़ी जीवात्माएं दुहागणवत भ्रमित रहती हैं :

--नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥
जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥
(पन्ना ७९१)
--सावणु आइआ हे सखी कंतै चिति करेहु ॥
नानक झूरि मरहि दोहागणी जिन्ह अवरी लागा नेहु ॥ *(पन्ना १२८०)*

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी में सुखी जीवन के आधारभूत तथ्य

*-डॉ. परमजीत कौर**

श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म गांव सराय नागा (मत्ते दी सरां), ज़िला श्री मुकतसर साहिब में ५ वैसाख, संवत् १५६१ तद्नुसार ३१ मार्च, सन् १५०४ ई को हुआ। आपके पिता का नाम श्री फेरूमल जी तथा माता का नाम बीबी दइआ कौर (सभराई) जी था। आप जी का जन्म के समय का नाम भाई लहिणा जी था। सदा श्री गुरु नानक देव जी के अंग-संग रहने से तथा उनके पथ-प्रदर्शन द्वारा आप श्री गुरु अंगद देव जी हो गये :

गुर अंगदु गुर अंग ते सच सबद समेउ।
(वार १३ : २५)

श्री गुरु अंगद देव जी का विवाह श्री देवी चंद जी की सुपुत्री माता खीवी जी के साथ हुआ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में माता खीवी जी के शीतल स्वभाव तथा सेवा का संकेत बहुत ही सत्कार से किया गया है :

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥
(पन्ना ९६७)

अर्थात् श्री गुरु अंगद देव जी की सुपत्नी माता खीवी जी अपने पति के समान बड़े नेक हैं। माता खीवी जी की शख़्सियत सघन पत्तों वाली छाया के समान है। माता जी के पास बैठने से ही हृदय में शांति पैदा हो जाती है। जैसे श्री गुरु अंगद देव जी के सतसंग में नाम की दौलत बांटी जा रही है, वैसे ही माता खीवी जी की सेवा से लंगर में सबको घी वाली खीर बांटी जा रही है।

श्री गुरु अंगद देव जी ने ६३ सलोक उच्चारण किए हैं जो श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अमरदास जी तथा श्री रामदास जी द्वारा उच्चरित वारों की पउड़ियों के साथ दर्ज किए गए हैं। आप जी की बाणी जीवन-उपयोगी उपदेशों द्वारा भटके हुए मनों को शांति प्रदान करती है तथा जीनव-लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सजग करती है।

दुर्लभ देह को प्राप्त करके नाम-सिमरन करते हुए जन्म-मरण के चक्कर से मुक्ति तथा परमात्मा में लीन होना ही मानव-जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। परमात्मा के नाम के सिमरन के बिना मनुष्य का जन्म व्यर्थ हो जाता है। श्री गुरु अंगद देव जी समझा रहे हैं :

निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥
सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥
(पन्ना १४८)

वही जीव मनुष्य कहलाने का अधिकारी है जो प्रभु-प्रेम में रहता है। गुरु साहिब के अनुसार जो सिर अपने स्वामी के समक्ष झुकता नहीं, उस सिर को काटकर फेंक देना चाहिए :

जो सिरु सांई न निवै सो सिरु दीजै डारि ॥
नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥ *(पन्ना ८९)*

मनुष्य चाहे किसी जाति, वर्ण का हो, प्रत्येक के लिए मानवता का धर्म एक है और

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा); फोन: ०१७३२२२४९८८*

वो है नाम-सिमरन। परमात्मा की बंदगी करने वाले का जीवन सफल है। बंदगी करने वाले पर ही प्रभु की कृपा होती है :

नदरि तिना कउ नानका नामु जि साबतु लाए रासि ॥ (पन्ना १२३८)

बंदगी रहित मनुष्य अंधे मनुष्य की तरह पग-पग पर भटकता रहता है। वास्तव में वह मनुष्य (रूहानी पक्ष से) अंधा है जो परमात्मा को भूल जाता है :

अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥
अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥
(पन्ना ९५४)

इसलिए आवश्यक है कि अमृत बेला में सतसंग में जाकर प्रभु की कीर्ति सुनी जाये तथा सारा दिन नेक जनों की संगत में रहा जाए :

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ (पन्ना १४६)

मन को प्रभु के साथ जोड़ने के लिए ज़रूरी है कि इसका पहला स्वभाव बदला जाए। किसी एक बर्तन में दूसरी वस्तु तभी रखी जा सकती है यदि उसमें पड़ी हुई पहली वस्तु निकाल दी जाए। मन में से माया के मोह को निकालकर ही उसे प्रभु के साथ जोड़ा जा सकता है :

वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥
(पन्ना ४७४)

परमात्मा के नाम को हृदय में बसाने के लिए गुरु के शबद की विचार ज़रूरी है। गुरमति के मार्ग पर चलकर ही हउमै दूर करके विनम्रता वाला स्वभाव बनाया जा सकता है। गुरु साहिब समझा रहे हैं कि हउमै एक दीर्घ रोग है, मगर यह लाइलाज नहीं है। यदि प्रभु की कृपा हो जाये तो जीव गुरु के शबद अनुसार जीवन बनाकर हउमै दूर कर सकता है :

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
(पन्ना ४६६)

गुरु की मति के अनुसार चलने के लिए गुरु की शरण में आना ज़रूरी है। गुरु के बिना अज्ञानता रूपी अंधकार दूर नहीं होता : *"गुर बिन घोर अंदारु गुरु बिन समझ न आवै ॥"* गुरु जी समझाते हैं कि मनुष्य का मन मानो कोठा (कमरा) है तथा शरीर इस कोठे की छत है। इस मन रूपी कोठे को मानो माया का ताला लगा हुआ है। इस ताले को खोलने के लिए गुरु चाबी है अर्थात् मन से माया के प्रभाव को गुरु ही दूर कर सकता है :

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥ (पन्ना १२३७)

गुरु की शरण में आए बिना मोह के बंधनों से मुक्त होना कठिन है। गुरु से प्राप्त ज्ञान के बिना आत्मिक जीवन की समझ नहीं आती। मनुष्य का स्वभाव है कि वो बातें करने में आनंद का अनुभव करता है। उसका मुख बोल-बोलकर, कान बातें सुन-सुनकर तृप्त नहीं होते तथा नेत्र रूप-रंग देख-देखकर संतुष्ट नहीं होते। रसों के अधीन हुई इंद्रियां सांसारिक विषयों से विमुख नहीं होती। समझाने पर भी भूख मिटती नहीं। तृष्णा के अधीन हुआ जीव तभी तृप्त हो सकता है जब वह गुरमति के मार्ग पर चलता हुआ प्रभु की सिफत-सालाह (गुण-कीर्तन) करता रहे तथा गुणों के स्वामी प्रभु में लीन रहे :

आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ॥
अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ॥

भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥
नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥
(पन्ना १४६)

परमात्मा की प्राप्ति की डगर पर चलने के लिए हउमै, मेर-तेर को त्यागकर जीवित रहते हुए अपनत्व को मारना ज़रूरी है। संसार में रहते हुए जीवित रहकर कैसे मरा जा सकता है, इसको विस्तार से समझाते हुए श्री गुरु अंगद देव जी बताते हैं कि यदि आंखों के बिना देखें भाव यदि आंखों को पर-रूप, पर-धन को देखने से रोक लिया जाये; कानों के बिना सुनें भाव यदि कानों का प्रयोग निंदा सुनने की आदत को हटाकर करें; यदि पैरों के बिना चलें भाव यदि पैरों को गलत राह पर चलने से रोक लिया जाये तथा हाथों के साथ किसी के नुकसान का कोई काम न किया जाये तो मनुष्य जीवित रहते अपनी हउमै को मारकर परमात्मा का मिलन प्राप्त कर सकता है :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥
(पन्ना १३९)

अपने-अपने कर्मों के अनुसार कोई जीव परमात्मा के नज़दीक हो जाता है, कोई दूर होता जाता है। जिन मनुष्यों ने परमात्मा को सदैव स्मृति में रखा है वे अपना जीवन सफल कर जाते हैं :

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

मनुष्य चाहे जितनी भी मेहनत करे परमात्मा का सामीप्य मन के हठ से नहीं प्राप्त किया जा सकता। वही मनुष्य परमात्मा की कृपा प्राप्त कर सकता है जो शुभ भावना रखता है तथा गुरु के शबद का विचार करके उसके अनुसार अपना जीवन बनाता है :

मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥
तरफ जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥ *(पन्ना ७८७)*

मनुष्य गलत रास्ते पर न चले, मंद कर्म न करे, इसके लिए हृदय में परमात्मा का निर्मल भय होना ज़रूरी है। गुरु जी बताते हैं कि यदि जीव प्रभु के डर में चलने को अपने पैर बनाये, प्रेम के हाथ बनाये तथा प्रभु की याद में जुड़ने को आंखें बनाये तो प्रभु को मिल सकता है :

दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥
रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥
भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥
नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥
(पन्ना १३९)

मनुष्य को हर समय कोई न कोई डर सताता रहता है। इस डर से छुटकारा परमात्मा के भय से ही पाया जा सकता है। गुरु जी के अनुसार जिन मनुष्यों के अंदर परमात्मा का भय है उनको दुनिया वाला कोई डर नहीं सताता, परमात्मा के भय में न रहने वालों को दुनिया का डर अधिक लगता है :

जिना भउ तिन्ह नाहि भउ मुचु भउ निभविआह ॥
(पन्ना ७८८)

चाहे दुख हो, चाहे सुख हो, सदा प्रभु का आश्रय ही लेना चाहिए :

जां सुखु ता सहु राविओ दुखि भी संम्हालिओइ ॥
नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥
(पन्ना ७९२)

सेवा सिमरन में विशेष सहायक है। सेवा करने से मन निर्मल होता है, अहंकार दूर हो जाता है, विनम्रता तथा परोपकार वाला स्वभाव बन जाता है। जिस सेवा के करने से दिल में प्रभु के लिए प्रेम पैदा न हो वह सेवा वास्तविक सेवा नहीं कहलाती। वास्तविक सेवक वही है जो स्वामी के साथ एकरूप हो जाता है :

एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥
नानक सेवकु कांढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥
(पन्ना ४७५)

गुरु साहिब सुखी जीवन के आधारभूत तथ्य बता रहे हैं। गुरु जी समझाते हैं कि प्रभु के हुक्म में चलना ही जीवन का सही रास्ता है। जीव की नाव में रजा की नकेल है जो प्रभु के हाथ में है: *"नक नथ खसम हथि . . . ॥"* राजा, मालिक तथा सरदार सबको परमात्मा के हुक्म में ही चलना पड़ता है। जीवों के वश में कुछ नहीं है। वही काम शुभ मानना चाहिए जो प्रभु को अच्छा लगता है :

चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥
जो तिसु भावै नानका साई भली कार ॥
जिन्हा चीरी चलणा हथि तिन्हा किछु नाहि ॥
साहिब का फुरमाणु होइ ऊठी करलै पाहि ॥
(पन्ना १२३९)

जीवन में आए सुख-दुख को परमात्मा की रजा समझकर सदा स्थिरचित्त रहना चाहिए। इससे मन शांत रहता है। जो मनुष्य कभी तो प्रभु के हुक्म के आगे शीश झुकाता है और कभी उसके किए पर एतराज़ करता है, समझो वह मालिक प्रभु की रजा के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं कर रहा :

सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥
(पन्ना ४७४)

दुनिया की परख करते रहने के स्थान पर स्वयं अपनी परख करने वाला ही असल में पारखी है :

नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥
रोगु दारू दोवै बुझै ता वेदु सुजाणु ॥
(पन्ना १४८)

किसी को भी बुरा नहीं कहना चाहिए। सारे जीवों का स्वामी प्रभु ही है :

मंदा किस नो आखीऐ जा सभना साहिब एक ॥
(पन्ना १२३७)

जो सब कुछ करने वाला है उस परमात्मा का गुण-कीर्तन करना चाहिए। अपने स्वार्थ में लगे लोगों की प्रशंसा करने में समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिये :

-कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥
नानक एकी बाहरा दूजा दाता नाहि ॥
(पन्ना १२३८)
-नानक सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥
(पन्ना ७९१)

जो कार्य खुशी-खुशी किया जाता है वही फलदायक होता है। जबरदस्ती, बे-मन से किए गए कार्य का कोई लाभ नहीं होता। इसी तरह मन के हठ से जबरदस्ती भक्ति करने से कोई आत्मिक लाभ नहीं होता :

बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥
सेती खुसी सुवारीऐ नानक कारजु सारु ॥
(पन्ना ७८७)

अपने बराबर वाले के साथ प्रेम, मित्रता ही स्थिर रहती है। अपने से छोटे एवं बड़े के साथ किया गया प्रेम पानी में पड़ी हुई लकीर के समान होता है, जिसका कोई निशान नहीं रहता :

नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥
पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न

थेहु ॥ *(पन्ना ४७४)*

किसी भी कार्य के लिए मूर्ख या अनजान व्यक्ति पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। यदि वह कोई छोटा-मोटा कार्य कर भी लेगा तो दूसरा बिगाड़ देगा :

होइ इआणा करे कंमु आणि न सकै रासि ॥
जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥
(पन्ना ४७४)

मानव शरीर नश्वर है। एक न एक दिन सबने यहां से चले जाना है। जिनको यह बात समझ आ जाती है वे मनुष्य सांसारिक पदार्थों के संग्रह में समय व्यतीत नहीं करते। केवल सांसारिक पदार्थों में लिप्त रहने वाले ही यहां से जाने का विचार मन में नहीं आने देते। यदि केवल एक रात के लिए अनावश्यक धन एकत्र किया जाए, प्रात: काल वहां से कूच कर जाना हो तथा जाते समय वह धन साथ न ले जाया जा सकता हो तो पश्चाताप होता है। इसी तरह अंतिम समय नज़दीक आने पर पश्चाताप होता है कि सारी उम्र जो धन-पदार्थ एकत्र करने में लगे रहे, वे सब यहां ही रह जाने हैं :

जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥
चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥
राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥
(पन्ना ७८७)

इसलिए फालतू धन-पदार्थ एकत्र करने तथा ज्यादा जायदाद आदि बनाने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। सांसारिक प्रशंसा, सम्मान आदि की प्राप्ति की कामना परमात्मा से दूर ले जाती है। इनमें से कुछ भी मरणोपरांत साथ नहीं जाता :

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥
एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥
(पन्ना १२९०)

जो मनुष्य अपने श्वासों की सारी पूंजी प्रभु-नाम के व्यापार में लगा देते हैं उन पर परमात्मा की कृपा होती है :

नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥
(पन्ना १२३८)

गुरु साहिब संक्षेप में समझा रहे हैं कि जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु-नाम बस जाता है वह सांसारिक विषयों से उपराम हो जाता है। परिवार के साथ भी उसका वह मोह नहीं रहता जो उसे त्रिगुणी माया में फंसाता है। ऐसा मनुष्य परमात्मा को हर समय, आठों पहर अपने मन में टिकाए रखता है। ऐसे मनुष्य बहुत कम मिलते हैं जो अथाह, अगम, अगोचर, अनंत प्रभु के दीदार में हर समय जुड़े रहते हैं :

सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥
अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥
दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥
(पन्ना १४६)





श्री गुरु अंगद देव जी : जीवन और बाणी

*-स. गुरदीप सिंघ**

श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म ५ वैसाख, संवत् १५६१ तद्नुसार ३१ मार्च, सन् १५०४ ई. को गांव सराय नागा, ज़िला श्री मुक्तसर साहिब में पिता श्री फेरूमल जी और माता बीबी दइआ कौर जी के गृह में हुआ। आपका बचपन का नाम भाई लहिणा जी था। १५ वर्ष की आयु में भाई लहिणा जी की शादी संघर गांव (खडूर साहिब के नज़दीक) के श्री देवी चंद जी की सुपुत्री माता खीवी जी से हुई। आपके घर दो सुपुत्र-- श्री दातू जी और श्री दासू जी तथा दो सुपुत्रियां-- बीबी अमरो जी और बीबी अनोखी जी ने जन्म लिया। भाई लहिणा जी देवी के पुजारी थे और देवी के दर्शन के लिए हर साल वैष्णो देवी जाया करते थे।

अक्तूबर, १५३२ ई. में भाई लहिणा जी श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन करने के लिए करतारपुर नगर गए। वहां पर श्री गुरु नानक देव जी के प्यार भरे वचनों को सुनकर उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए और उनके चरणों में रहने का मन बना लिया। भाई लहिणा जी लगभग सात साल श्री गुरु नानक देव जी की संगत में रहे और पूरी तनदेही एवं निष्ठा के साथ श्री गुरु नानक देव जी की सेवा की।

भाई लहिणा जी की अनन्य भक्ति और सेवा-भावना को देखते हुए श्री गुरु नानक देव जी बहुत प्रसन्न हुए और भाई लहिणा जी को सीने से लगाकर कहा कि "अब तुम्हारे और मेरे में कोई अंतर नहीं है। अब तुम 'लहिणा' नहीं 'अंगद' हो अर्थात् मेरे शरीर का अंग।" इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को सन् १५३९ में गुरिआई की जिम्मेदारी सौंप दी।

गुरिआई की जिम्मेदारी के बाद श्री गुरु अंगद देव जी ने धर्म-प्रचार का केंद्र खडूर साहिब को बनाया और संगत को श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा से जोड़ने का भरपूर प्रयास करने लगे।

श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि का विकास किया। श्री गुरु नानक देव जी ने राग 'आसा' में वर्णमाला के अनुसार ३५ अक्षरों की 'पटी' बाणी उच्चारण की और श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि का बाल-बोध तैयार करवाया। खडूर साहिब में गुरु जी ने गुरमुखी के विकास और प्रचार के लिए पाठशाला की स्थापना की।

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी ६३ सलोकों में हैं। इनमें सम्पूर्ण मानव-जीवन का सार समाया हुआ है। आप जी द्वारा रचित बाणी में प्रभु-प्रेम, प्रभु-मिलाप, गुरमति सिद्धांत और प्रभु के हुक्म को मानना प्रमुख है। आपने अवगुण, विकार, अहं का त्याग और सेवा तथा नाम-सिमरन का उपदेश दिया है।

सेवा करते हुए सच्चा सेवक वही कहलाता है जो अपने मालिक प्रभु में अभेद हो जाए :
एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०*

नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥
(पन्ना ४७५)

मज़बूरी में की गई सेवा का कोई लाभ नहीं :

बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥
(पन्ना ७८७)

गुरु जी उच्चारण करते हैं कि जिन जीव रूपी स्त्रियों का पति (खसम) घर में रहता है उनके लिए मानो बसंत आई हुई है, परंतु जिनके प्रिय प्रीतम परदेस गए हुए हैं वे दिन-रात पति (प्रभु) से मिलने के लिए विरह की अग्नि में जलती रहती हैं :

नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥
जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥
(पन्ना ७९१)

जब तक मनुष्य अकाल पुरख को नहीं पहचानता तब तक उसका जन्म व्यर्थ है। प्रभु की कृपा से जो जीव नाम-सिमरन में लग जाते हैं वे इस संसार समुद्र से पार हो जाते हैं। गुरु जी का कथन है कि जो प्रभु (जगत का मूल) सब कुछ करने योग्य है; जिस करतार के हाथ में जगत को बनाने की शक्ति है; जिसकी सत्ता का पूरे संसार में साम्राज्य है, उसका ध्यान कर :

निहफल तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥
सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥
करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥
(पन्ना १४८)

जो कोई अपने प्यारे प्रभु के अलावा किसी अन्य से भी लगाव रखे उसके प्रेम को सच्चा नहीं कहा जा सकता। सच्चा प्रेमी उसे ही कहा जाता है जो हर समय अपने प्रियतम की याद में लगा रहे; अपने प्यारे द्वारा मिले दुख-सुख को सहर्ष माने :

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥
नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥
(पन्ना ४७४)

प्रभु अंतरयामी है। वो सबके दिल की जानता है। वह मालिक है। उसके हुक्म की कोई भी अवहेलना नहीं कर सकता। सबको उसके हुक्म के अनुसार ही चलना पड़ता है। गुरु साहिब उपदेश देते हैं कि वही काम करना चाहिए जो प्रभु को अच्छा लगे :

तिसु सिउ कैसा बोलणा जि आपे जाणै जाणु ॥
चीरी जा की ना फिरै साहिबु सो परवाणु ॥
चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥
जो तिसु भावै नानका साई भली कार ॥
(पन्ना १२३९)

प्रभु सबके दिल की जानता है, क्योंकि वह स्वयं ही सबको बनाता है, स्वयं ही सबके कार्य सम्पन्न करवाता है। प्रभु के आगे नत्मस्तक होकर पूरी निष्ठा और श्रद्धा से विनती करनी चाहिए :

आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥
तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥
(पन्ना १०९३)

मनुष्य का मन एक प्रकार का घर है। शरीर उसकी छत है। इस मन रूपी घर को माया (धन-दौलत) का ताला लगा हुआ है। इस ताले को खोलने की चाबी गुरु है। गुरु के बिना मन के कपाट कभी नहीं खुल सकते, क्योंकि कुंजी तो स्वयं गुरु ही है।

गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥
नानक गुर बिनु मन का ताकु न ऊघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥ *(पन्ना १२३७)*

यदि सौ चंद्रमा और हज़ार सूर्य एक साथ

मिलकर आकाश में चांदनी, रोशनी करें तो भी गुरु के बिना अंधकार है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

यदि कोई सेवक (नौकर) अपने मालिक की नौकरी (चाकरी) भी करे और इसके साथ अहं-भाव भी रखे तो इस प्रकार के व्यवहार से उसका मालिक प्रसन्न नहीं हो सकता। अपने आप को मिटाकर मन से मालिक की सेवा करे तो उसे प्यार और आदर मिलता है। वह मालिक की प्रसन्नता हासिल कर लेता है। ऐसा सच्चा सेवक ही मालिक के दर पर कबूल होता है :

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥
आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥ *(पन्ना ४७४)*

हउमै का स्वभाव है परमात्मा से अलग अपनी अहमियत बनाना। वैसे काम करने जिससे अलग प्रकार की अहमियत के कारण मनुष्य बंधनों में बंधा रहता है। वह बार-बार जन्म लेता और मरता है। स्वाभाविक ही यह प्रश्न उठता है कि जीव में इस प्रकार की अलग अहमियत क्यों बनती है? यह कैसे मिट सकती है? इसका जवाब यही है कि अलग अहमियत मिटाने वाला प्रभु स्वयं ही है। मनुष्य किए हुए कर्मों के कारण ही बार-बार जन्म-मरण के चक्कर को दुहराता है। हउमै एक प्रकार का दीर्घकालीन रोग है। यदि परमात्मा अपनी कृपा कर दे और जीव परमात्मा के नाम से जुड़ जाए तो हउमै रूपी दीर्घ रोग, दुख दूर हो जाते हैं :

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥
(पन्ना ४६६)

गुरु जी संसार की नाशमानता एवं पदार्थों के संग्रह को व्यर्थ बताते हुए उदाहरणस्वरूप उच्चारण करते हैं कि यदि केवल एक रात की खातिर धन इकट्ठा किया जाए और सुबह उठकर वहां से चल दिया जाए और चलते समय वह धन साथ न जा सके तो खाली हाथ मलने पड़ते हैं :

राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥
(पन्ना ७८७)

गुरु साहिब फरमान करते हैं कि हे जीव! अपनी रोज़ी-रोटी को लेकर ज्यादा चिंतित न हो। यह चिंता स्वयं प्रभु को है। उसने पानी में भी जीव पैदा किए हैं। उनको भी प्रभु ही रिज़क दे रहा है :

नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हेइ ॥
जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥
(पन्ना ९५५)

गुरु साहिब के अनुसार वे सांसारिक मान-सम्मान, जो प्रभु की निकटता पाने में बाधक बनते हैं, उनसे किनारा कर लेना ही बेहतर है। ऐसे मान-सम्मान व यश-कीर्ति साथ नहीं जाया करते, साथ मात्र प्रभु के यश में की गई कीर्ति ही जाती है :

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥
एनी जलीई नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥ *(पन्ना १२९०)*



सेवा, समर्पण एवं प्रेम के शिखर : श्री गुरु अंगद देव जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

गुरमति में सेवा को अति विशिष्ट स्थान प्रदान किया गया है। गुरबाणी के अनुसार सेवा 'मुक्ति का द्वार' है। सेवा करने वाला मनुष्य अकाल पुरख की दरगाह में स्थान प्राप्त कर सकता है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (पन्ना २६)

जो निष्काम भाव से सेवा करता है उसे ही अकाल पुरख की प्राप्ति हो पाती है :

सेवा करत होइ निहकामी ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ (पन्ना २८६)

गुरबाणी का आदेश है कि समस्त चालाकियां, चालबाज़ियां त्यागकर निष्ठावान सेवक की तरह विनम्रता से सेवा करनी चाहिए :

सगल सिआनप छाडि ॥
करि सेवा सेवक साजि ॥ (पन्ना ८९५)

सेवा की इस अवधारणा का मूर्त रूप द्वितीय पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन में प्रत्यक्ष दिखाई देता है। आप सन् १५३२ ई से लेकर १५३९ ई तक करतारपुर में प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी के आश्रय में रहे और समर्पित भाव से ऐसी सेवा की, जिसकी मिसाल अन्य मिलना असंभव है। द्वितीय पातशाह का फरमान है :

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
(पन्ना ४७४)

भाई राय बलवंड जी गुरु पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी की इस सेवा के बारे में फरमान करते हैं :

पए कबूलु खसंम नालि जां घालि मरदी घाली ॥
(पन्ना ९६७)

श्री गुरु अंगद देव जी ने प्रथम पातशाह की जो सेवा की उससे संबंधित अनेक प्रसंग 'जन्म-साखियों' में प्राप्त होते हैं। ये प्रसंग द्वितीय पातशाह की विनम्रता, प्रेम, समर्पण आदि वैयक्तिक विशेषताओं को उजागर करते हैं।

घास का गट्ठर उठवाना : श्री गुरु नानक देव जी के प्रथम दर्शन प्राप्त करके भाई लहिणा जी खडूर साहिब चले गये, परंतु शीघ्र ही आपका हृदय गुरु-दर्शन हेतु विह्वल हो उठा। आप तुरंत करतारपुर लौट गये। पता चला कि गुरु जी खेतों में गये हुए हैं। आप शीघ्रता से खेत में पहुंचे तो देखा कि गुरु जी खेत में से खरपतवार चुगवाकर उसका गट्ठर बांध रहे हैं। गुरु जी ने भाई लहिणा जी से उस कीचड़ भरे गट्ठर को सिर पे उठाकर घर ले चलने के लिए कहा। भाई लहिणा जी ने पलक झपकते ही गट्ठर सिर पे उठाया और घर जा पहुंचे। गट्ठर से टपकते कीचड़ से आपके रेशमी वस्त्र गंदे हो गये। माता सुलक्खणी जी ने गुरु प्रथम पातशाह से कहा कि आपने भाई लहिणा जी के वस्त्रों का ज़रा भी ख़्याल नहीं रखा तो गुरु जी ने उत्तर दिया कि भाई लहिणा जी के वस्त्रों पर कीचड़ नहीं केसर का छिड़काव हुआ है :

पंक जोन तुम को द्रिशटावा।
केसर को हमने छिरकावा।
(नानक प्रकाश कृत भाई संतोख सिंघ)

इस प्रकार द्वितीय पातशाह ने परिश्रम के महत्त्व को व्यवहारिक रूप से स्थापित किया।

गंदे नाले से कटोरा निकालना : एक बार श्री गुरु नानक देव जी का कटोरा किसी गंदे नाले में गिर

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१

गया। गुरु जी ने अपने पुत्रों एवं साथ चल रहे सिक्खों से कटोरा निकालकर लाने के लिए कहा तो सभी ने इंकार कर दिया। तब गुरु जी ने भाई लहिणा जी को आदेश दिया :

तब लहिणे दिस क्रिपा निधाना।
अविलोकओ उस बचन बखाना।
महाभाग करदम कै माही।
जाहि निकास स्वछ कर ताही। *(वही)*

भाई लहिणा जी ने तुरंत गुरु-आज्ञा का पालन किया। गंदे नाले में से कटोरा निकाला और धो-मांज कर ला हाज़िर किया :

कूद परयो करदम के माही ।
आइसु अनुसारी प्रन जाही ।
बासन को निकास ले आवा।
माझ पखारयो भला बनावा ॥ *(वही)*

ढही दीवार को बनाना : भाई लहिणा जी में सेवा और आज्ञा-पालन ही सबसे बड़ी चीज़ थी। एक बार सर्दियों की रात में तेज़ वर्षा हो रही थी। आधी रात के बाद अचानक श्री गुरु नानक देव जी की धर्मशाला की दीवार ढह गई। गुरु जी ने सिक्खों से कहा कि दीवार तैयार करो, परंतु सभी 'सुबह देखा जायेगा' कहकर टाल गये। गुरु जी ने भाई लहिणा जी को आज्ञा दी वे तुरंत दीवार बनाने में जुट गये। जब दीवार बनकर तैयार हो गई तो गुरु जी ने कहा कि यह सीधी नहीं बनी, इसे गिराकर फिर से बनाओ। भाई लहिणा जी ने 'जो आज्ञा कहकर' दीवार गिरा दी और फिर बनाने लगे। जब दीवार दोबारा बनकर तैयार हुई तो गुरु जी ने फिर एक दोष निकालकर गिरवा दिया और नई दीवार बनाने को कहा। भाई लहिणा जी तन-मन से कार्य में जुटे रहे। सुबह तक चार बार दीवार बनी और चार बार ढहाई गई। भाई लहिणा जी गुरु जी की आज्ञा को ही प्रथम कर्त्तव्य मानते थे।

रात को नदी से वस्त्र धोकर लाना : एक बार रात को गुरु जी ने आज्ञा दी कि जाओ और नदी से हमारे वस्त्र धोकर लाओ। सभी ने कहा, अभी रात है। गुरु जी ने भाई लहिणा जी से कहा। भाई लहिणा जी 'सत्य बचन' कहकर रात को ही रावी नदी के किनारे गये और वस्त्र धो लाये।

प्रथम पातशाह के प्रति अटूट समर्पण : भाई लहिणा जी का श्री गुरु नानक देव जी के चरणों से ऐसा लगाव था कि वे हर समय गुरु जी की सेवा में ही रहते। एक बार सर्दियों के मौसम में गुरु जी रावी पर स्नान करने के लिए गये। गुरु जी स्नान करने लगे। इतने में तेज़ बर्फ़ीली हवा के साथ बारिश शुरू हो गई और ओले पड़ने लगे। सभी सिक्ख भाग कर इधर-उधर जा छिपे परंतु भाई लहिणा जी धीरज धर गुरु जी की सेवा में ही खड़े रहे।

द्वितीय पातशाह ने स्वयं गुरु के महत्त्व का बखान करते हुए फरमाया है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

भाई लहिणा जी के और भी कई परीक्षाओं में से उत्तीर्ण होने के बाद प्रथम पातशाह ने उन्हें गले से लगाया और कहा-- "तुम हमारे शरीर के अंग जैसे प्यारे हो, इसलिए आज से तुम्हारा नाम 'अंगद' हुआ।"

अब तू मेरे अंग ते भइआ।
तू लहना मै देन दइआ। *(महिमा प्रकाश)*

श्री गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणा जी को श्री गुरु अंगद देव जी बनाकर द्वितीय गुरु के रूप में शोभायमान कर दिया। द्वितीय पातशाह का कथन है :

सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई पोतेदार ॥
कुंजी जिन कउ दितीआ तिन्हा मिले भंडार ॥
(पन्ना १२३९)

अर्थात् जिन्हें नाम-सिफत की बख़्शिश हुई है, वे ही धनी हैं; जिन्हें चाबी मिली है, उन्हें ही खज़ाना मिलेगा।



नैतिक चेतना के द्योतक शेख फरीद जी

*-डॉ निर्मल कौशिक**

साहित्य, संगीत, कला का ज्ञाता होने के कारण ही मनुष्य सभी जीवों में श्रेष्ठ है और समाज में सभ्य माना जाता है। उसे अच्छे-बुरे की पहचान हो जाती है। बुरे कर्मों से बचने और अच्छे कर्मों में प्रवृत्त होने के लिए सभ्य होना बहुत ज़रूरी है।

अनैतिक मान्यताओं का खंडन कर तथा नैतिकता का रास्ता अपनाकर मानव ने स्वयं को प्रगति के पथ पर अग्रसारित किया। वह जानता है कि नैतिक कार्यों में प्रवृत्त होने पर ही वह समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान पा सकता है। इसके विपरीत अनैतिक कार्य करने पर वह समाज में अपमान और घृणा का पात्र बनता है।

नैतिकता वास्तव में व्यवहार की वह नीति है जिससे अपना कल्याण हो और दूसरों को कोई बाधा या हानि न हो। अच्छे व्यवहार के लिए शुभ, कल्याणकारी एवं अच्छाई का संकल्प ही मंगलकारी और उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अत: नैतिकता से अभिप्राय, मानव को दुर्गुणों से बचाकर सद्गुणों की ओर प्रेरित करना है। यह कार्य अगर कोई रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से करता है तो उसे 'नैतिक चेतना' कहा जाता है। नैतिक चेतना मनुष्य के व्यवहार को संयमित और सुनियोजित बनाती है। निस्संदेह नैतिक चेतना मानव की सद्वृत्तियों और सद्गुणों का विकास करती है।

नैतिक चेतना का प्रथम गुण सदाचार है। वृहद हिंदी कोश में नीति अथवा नैतिकता को लोकोपयोगी सिद्धांत कहा गया है। महान कोश में मानव को श्रेष्ठ गुणों की ओर अग्रसर करने के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है, इसीलिए समाज में समादृत होने के लिए मानव के लिए नैतिक चेतना का होना आवश्यक है। नैतिक चेतना के द्वारा ही मानव स्वयं को प्रतिष्ठित करने के लिए नैतिक मानदंडों की स्थापना करता है।

बारहवीं सदी में पैदा हुए शेख फरीद जी ने द्वेष और वैमनस्य की भावना से उत्पन्न हुई कटुता को दूर करने के लिए अपनी बाणी द्वारा समाज में नैतिक चेतना लाने का प्रयास किया। शेख फरीद जी ने अवगुणों और दुर्गुणों से मुक्ति पाने हेतु लोगों को समझाने के लिए स्वयं को अवगुणों से भरपूर बताया। उन्होंने इस बात की तनिक परवाह नहीं की कि लोग क्या कहेंगे। शेख फरीद जी ने नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए समाज में नैतिक चेतना के अभाव की पूर्ति करना श्रेयस्कर समझा। उन्होंने फरमान किया है :

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥
गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥
(पन्ना १३८१)

शेख फरीद जी ने अवगुणों और दुर्गुणों से मुक्ति पाने के लिए गुरु के उपदेश को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना है। गुरु का उपदेश ही मानव के अंदर नैतिक चेतना पैदा कर सकता है। सच्चे गुरु के बताए मार्ग पर चलकर मनुष्य अज्ञानांधकार से मुक्ति पा सकता है। सच्चा गुरु

*१६३, आदर्श नगर, ओल्ड कैंट रोड, फरीदकोट-१५१२०३, फोन : ०१६३९-२६३०१७

ही अच्छे मार्ग का ज्ञान प्रदान कर सकता है। इसी से नैतिक चेतना पैदा होती है और मनुष्य के अंदर ज्ञान का प्रकाश होता है। शेख फरीद जी ने अपनी बाणी में सत्य को अपनाने और झूठ न बोलने का संदेश देते हुए, धर्म का पालन करते हुए गुरु के बताए मार्ग पर चलने का संदेश दिया है। वे कहते हैं :

बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥ (पन्ना ४८८)

नैतिक चेतना से मनुष्य को आत्म-ज्ञान प्राप्त होता है। सर्वप्रथम वह अपने को जानने का प्रयास करता है; स्वयं को अनुशासित और सद्‌गुणों से अभिप्रेरित करके फिर दूसरों को सचेत करता है। शेख फरीद जी भी स्वयं को सद्‌गुणों व अनुशासन से अभिप्रेरित करके बुरे लोगों को नैतिक चेतना प्रदान करने में जुट जाते हैं। शेख फरीद जी ने अपनी बाणी में ऐसे-ऐसे सुझाव दिए हैं कि सामान्य व्यक्ति भी स्वयं को अवगुणों से मुक्त कर सकता है। उन्होंने बुराई करने वाले व्यक्ति से बदला न लेने की बात कही है। उन्होंने कहा है कि बुराई करने वाले से भी अच्छाई का व्यवहार करो। इससे उसका व्यवहार बदल जाएगा। उसकी सुप्त नैतिकता जागेगी। इससे उसका तो भला होगा ही खुद भी क्रोध-मुक्त होकर सर्वस्व प्राप्त किया जा सकता है। शेख फरीद जी का कथन है :

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥
(पन्ना १३८१)

समाज में नैतिक चेतना के लिए सर्वप्रथम मनुष्य को स्वयं से इस कार्य का आरंभ करना चाहिए। उसे अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना चाहिए। शेख फरीद जी ने अपनी बाणी में सैद्धांतिक पक्ष के साथ-साथ व्यवहारिक पक्ष को भी महत्त्व प्रदान किया है।

शेख फरीद जी की बाणी का व्यवहारिक पक्ष भी उतना ही सशक्त है जितना कि सैद्धांतिक पक्ष। इसका कारण यह है कि शेख फरीद जी की कथनी और करनी एक समान है। उनकी बाणी का व्यवहारिक पक्ष उनके अपने जीवन के अनुभवों का ही परिणाम है। अपने आस-पास की समस्त घटनाओं को अपनी बाणी द्वारा उद्‌घाटित कर उन्हें समाज-कल्याण हेतु प्रस्तुत करना ही शेख फरीद जी का उद्देश्य है। उन्होंने जीवन के लिए उपयोगी नैतिक-मूल्यों को बाणी में सम्मिलित कर मानव का जीवन-पथ आलोकित किया है। यह शेख फरीद जी की नैतिक चेतना लाने का एक सरलतम मार्ग है जिसमें शेख फरीद जी की त्यागमयी और मानव-कल्याण की भावना निहित है। समाज में रहकर हमें बड़े-छोटे का भेद मिटाकर समभाव से रहने का प्रयास करना चाहिए। जब हम दूसरे का शोषण कर मलिक भागो के समान बन जाते हैं तो समाज में विषमता फैल जाती है। शेख फरीद जी के युग में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं थी। शेख फरीद जी ने इसे अनैतिक मानते हुए समाज में समतावाद लाने के लिए अपनी बाणी के द्वारा समाज में व्याप्त इस कुरीति को दूर करने हेतु नैतिकता का पाठ पढ़ाया। उन्होंने समाज में नैतिक चेतना लाने के लिए स्पष्ट शब्दों में कहा है :

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥
जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥
(पन्ना १३७९)

मानव-समाज में शोषण और शोषत सदैव विद्यमान रहे हैं। पूंजीपति वर्ग सदैव मज़दूर वर्ग का शोषण करता आ रहा है। शेख फरीद जी

ने शोषक वर्ग को चेतावनी दी है कि इसका फल तो उन्हें भोगना ही पड़ेगा। शेख फरीद जी ने इस अवगुण से बचने का बहुत ही सरलतम उपाय बताया है। सब्र और संतोष से बढ़कर कोई धन नहीं। जो ईश्वर ने दिया है उसी से संतोष करना चाहिए। सादा भोजन करना और सादगी से जीवन व्यतीत करना ही मानव के लिए श्रेष्ठ है। हमें दूसरे का धन-दौलत, अच्छा खान-पान देखकर अपने मन को तरसाना नहीं चाहिए। सादगी में ही सच्चा सुख है। सब्र और संतोष ही मनुष्य को तनाव और भटकाव से बचाते हैं। शेख फरीद जी अपनी बाणी के माध्यम से इस चेतना को नैतिक धरातल पर प्रस्तुत कर प्रत्येक मनुष्य को दूसरे का हक न छीनने का संदेश देते हैं। उनका कथन है :

रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥
फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥
(पन्ना १३७९)

शेख फरीद जी की बाणी की अनन्य विशेषता यह है कि यह हमें अपनी कथनी और करनी को समान रूप से व्यवहारिकता में लाने का संदेश देती है। शेख फरीद जी ने नैतिक चेतना के माध्यम से मानव को चेताया है कि जीवन में अच्छे विचारों को अपने व्यवहार में लाओ, अन्यथा ईश्वर के दरबार में शर्मिंदा होना पड़ेगा। जो भी सत्कर्म करना है क्रियात्मक रूप से करो, बातों से नहीं। अपने सत्कर्मों से अपने व्यवहार को सुदृढ़ और सशक्त करो। मनुष्य का चिंतन और कर्म सब समान हों। शेख फरीद जी ने मानव को चेताया है कि ईश्वर ने उसे यहां इस सृष्टि में कुछ विशेष कार्य हेतु भेजा है। मनुष्य को वह कार्य सम्पन्न करना है। कर्मों का लेखा (हिसाब) मांगा जाएगा। शेख फरीद जी ने मानव को सदैव अच्छे कर्म करने की ही प्रेरणा दी है, लेकिन इंसान है कि समझता ही नहीं। उसका सारा जीवन खाने-सोने में ही बीत जाता है और वो अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक जाता है। वे अपनी बाणी के माध्यम से मानव को सचेत करते हुए फरमान करते हैं :

फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ संमि ॥
लेखा रबु मंगेसीआ तू आंहो केर्हे कंमि ॥
(पन्ना १३७९)

शेख फरीद जी ने आजीवन सादगीपूर्ण जीवन बिताया। शेख फरीद जी ने मानव को अत्यंत विनम्र रहने और मधुर बाणी बोलने के लिए प्रेरित किया है। शेख फरीद जी ने स्वयं आजीवन दरवेस का जीवन व्यतीत किया। वे तप और त्याग की साक्षात् मूर्त थे। विनम्रता और सहनशीलता उनके आभूषण थे। करुणा और क्षमा सदैव उनके जीवन को अलंकृत करते रहे हैं। उनके इन्हीं नैतिक गुणों के कारण लोग उन्हें दरवेस कहते थे। शेख फरीद जी इतने सरल स्वभाव और उदार वृत्ति के थे कि जो लोग उन्हें हानि पहुंचाते थे वे उनसे भी कभी बदले की भावना से व्यवहार नहीं करते थे। उनका मानना है कि जब आप किसी से बदला लेने की भावना से व्यवहार करते हैं तो भी आप क्रोध के वशीभूत होकर ही ऐसा करते हैं।

शेख फरीद जी की नैतिक चेतना का स्तर बहुत ऊंचा है। वे सदैव मानव-कल्याण की बात को ही प्राथमिकता देते हैं। वे बुरे से भी भले का व्यवहार करने की सलाह देते हैं। वे बुरे व्यक्ति को भी सम्मान देने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका फरमान है :

फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि ॥

आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ॥
(पन्ना १३७८)

शेख फरीद जी की बाणी की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि शेख फरीद जी जिस नैतिक चेतना लाने की बात करते हैं वे उसे स्वयं से आरंभ करते हैं। उन्होंने सारे मानव-समाज को सुधारने अथवा नैतिकता का पाठ पढ़ाने की उपेक्षा स्वयं का विश्लेषण कर अपने अंदर झांकने और अपने अवगुणों को दूर करने की नेक सलाह दी है। अगर प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर झांक ले और स्वयं को नैतिक धरातल पर चलने के लिए तैयार कर ले तो समूचा मानव-समाज स्वयं ही सुधर जाएगा। बात केवल इतनी है कि दूसरों को नसीहत देने की अपेक्षा मनुष्य स्वयं के अंदर झांक ले तो समाज में सद्भावना और सहयोग का वातावरण स्वयं ही पैदा हो जाएगा। उनके अनुसार :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नीवां करि देखु ॥
(पन्ना १३७८)

शेख फरीद जी की बाणी की यह विशेषता है कि वह मानव में नैतिक पक्ष को सुदृढ़ करती है, नैतिक मूल्यों के संरक्षण और पोषण को क्रियान्वित करती है; उन नैतिक, मानवीय मूल्यों का मार्ग भी प्रशस्त करती है जो मानव के लिए संरचनात्मक और प्रगतिशील दृष्टिकोण के परिचायक हैं। समाज में हर व्यक्ति को सम्मान मिले। समाज में हर छोटा-बड़ा व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। नैतिक मानदंडों के अनुसार हर व्यक्ति समाज-संरचना में योगदान दे, आदर्श समाज के सृजन में सकारात्मक और सृजनात्मक भूमिका अदा करे, एक-दूसरे का दुख बांटे, ऊंच-नीच का भेदभाव न हो, जात-पात का भेद दूर हो। यह तभी संभव है जब समाज के विपन्न और मज़लूम वर्ग को भी सम्मान और समान अधिकार दिया जाए। शेख फरीद जी ने हीन और तुच्छ व्यक्ति अथवा वस्तु को भी सम्मान प्रदान करने के लिए नैतिक चेतना लाने का प्रयास किया है। वे फरमान करते हैं :

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥
जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥
(पन्ना १३७८)

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि शेख फरीद जी ने समाज में व्याप्त अवगुणों के निवारण और सद्गुणों व सद्वृत्तियों को समायोजित करने के उद्देश्य से, मानव में नैतिक चेतना की आवश्यकता को जानते हुए, अपनी बाणी के माध्यम से अत्यंत सरल, सहज और उदात्त शैली में, जनसाधारण की भाषा में अपनी बात को समझाने की चेष्टा की है। वे जानते थे कि मानव की उदार दृष्टि ही समाज में सद्वृत्ति, सद्गुण, समता, सदाचार और सद्भावना पैदा कर सकती है। अगर ऐसा संभव हुआ तो मानव-समाज में नैतिक चेतना स्वत: मुखरित हो जाएगी। शेख फरीद जी की बाणी इसी विचारधारा को पोषित करने का एक साधन है। आज के मानव-समाज के लिए नैतिक चेतना परमावश्यक है। यह कार्य शेख फरीद जी की बाणी सहज ही कर सकती है। ❁

खालसा रूप में सम्पूर्ण मानव का स्वरूप

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

खालसा रूप में सजे प्रत्येक मनुष्य की पहचान अत्यंत विशिष्ट, विशेष, विलक्षण, उत्कृष्ट और महत्त्वपूर्ण ही नहीं बल्कि संपूर्ण मानव की पहचान होती है। खालसा रूप (विश) में सजे नर-नारियों, बच्चों को दूर से ही पहचान लिया जाता है। इन्हें देखने वाले आकर्षित व प्रभावित हुए बिना नहीं रहते हैं। खालसा रूप आकर्षक एवं प्रभावशाली होता है। वह अपने निकट आने या रहने वाले अन्य व्यक्तियों में हौसला, जोश तथा निर्भयता के भाव भर देता है, सुरक्षा का एहसास कई गुना बढ़ा देता है। इससे सिद्ध होता है कि खालसा रूप हौसले, हिम्मत, जोश, निडरता और सुरक्षा का प्रतीक है, चिन्ह है। यह आचरण, व्यवहार की शुद्धता का, सच्चाई, ईमानदारी और उच्च नैतिकता का, मानवीय उसूलों-सिद्धांतों का भी प्रतीक है। तभी तो खालसा रूप को सम्पूर्ण मानव का स्वरूप कहने एवं मानने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है। खालसा रूप का महत्त्व केवल वाह्य वेशभूषा (बाणा) के कारण ही चिन्हित नहीं होता है, अपितु उच्च मानवीय गुणों के कारण भी इसका बहुत ज्यादा महत्त्व है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने "खालसा मेरो रूप है खास। खालसे में हउं करउं निवास। ... खालसा मेरो सतिगुर पूरा। खालसा मेरा सज्जन सूरा।" जैसे भाव उच्चारित कर खालसा को गौरव प्रदान किया। उन्होंने खालसा को अपना रूप स्वीकार किया। खालसा रूप सज्जनता, नेकी, सेवा, मानव-कल्याण, सच्ची किरत, कर्म-धर्म, समर्पण, दया, दयालुता, शूरवीरता का भी प्रतीक है; मानवता के इतिहास में मील-पत्थर है। ऐसा मील-पत्थर जो मानवता के कल्याण-मार्ग को अकाल पुरख के मिलन-मार्ग के रूप में दर्शाता है। खालसा सही ढंग से जीवन व्यतीत करने का एक फलसफ़ा है, आधार है, जीवन-उद्देश्य है, उच्च विचारधारा है। खालसा रूप जैसा कोई अन्य उच्च कोटि का और शानदार, आन-बान वाला रूप हो ही नहीं सकता, इसीलिए तो इसकी एक अलग और अद्भुत, चमकते सूर्य जैसी पहचान है।

इस धरा पर जब भी कोई मानवीय स्वरूप किसी बच्चे के रूप में पैदा होता है तो वह साबत सूरत में ही पैदा होता है। बाद में आयु बढ़ने के साथ-साथ यह साबत सूरत वाला रूप और स्पष्ट होता जाता है, निखरता जाता है। यदि इस रूप को खंडित न किया जाए, बिगाड़ा न जाए तो इसकी आभा और शोभा कई गुना बढ़ जाती है। यह सच है कि लगभग प्रत्येक धर्म-संप्रदाय के अगुआ गुरु, संत, पैगंबर, ऋषि मुनि, साधु सब के सब केशधारी, साबत सूरत ही हुए हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा को प्रकट करने के बाद इसे पांच ककार (केश, कंघा, कृपाण, कड़ा, कछहिरा) धारण करवाकर तथा खंडे-बाटे का अमृत छकाकर अमरत्व प्रदान किया। खुद पांच प्यारों के हाथों से अमृत-पान कर खालसा को और भी महान बनाया। इसे आदर्श रहित मर्यादा बख़्शिश

**बी-एक्स ९२५, मुहल्ला संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

कर इसे अनुशासित एवं मर्यादित किया। अनुशासन और रहित मर्यादा के बिना खालसा रूप यानि मानव रूप न तो उच्च स्तरीय, पवित्र, अनुकरणीय बन पाता और न ही संपूर्ण स्वरूप बन पाता। प्रकृति और परमात्मा को भी अनुशासन व मर्यादा बहुत प्रिय है। संपूर्ण ब्रह्मांड अनुशासन में ही गतिशील है। रहित मर्यादा बंदिश नहीं है यह खालसा रूप का अकाल पुरख के साथ एक पवित्र बंधन-रूप है, संबंध-रूप है, वाहिगुरु की बंदगी का साधन-रूप है, साधना-रूप हैं, माध्यम-रूप है।

खालसा रूप में सजा प्रत्येक मानव (सिक्ख) संत होने के साथ-साथ अपने गुरु का सच्चा सिपाही भी होता है। इससे सिद्ध होता है कि खालसा भक्ति और शक्ति का प्रतीक है। भक्ति से मन में धर्म, दया, प्रेम, स्नेह, भ्रातृत्व, सदाचार, सद्भावना, भाईचारा, समर्पण, सेवा, कल्याण, एकात्मकता जैसे सर्वश्रेष्ठ भाव एवं गुण पैदा होते हैं। शक्ति हमें गरीब की रक्षा करने की, असहायों, निराश्रितों, बच्चों, बुजुर्गों, औरतों की सहायता करने की, उनकी रक्षा करने की प्रेरणा देती है, इसीलिए तो खालसा रूप को संपूर्ण मानव का स्वरूप स्वीकार किया जाता है।

'खालसा' (खालिसा) अरबी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है- "शुद्ध, खालिस, जो राज्य के प्रबंध में हो, बादशाह का।" श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रत्येक खालसा (सिक्ख) भी तो बादशाह ही होता है। वह किसी का गुलाम नहीं होता है। वह संपूर्ण रूप से स्वतंत्र होता है। किसी सरकार का चापलूस होने वाला व्यक्ति, अन्याय के सामने झुकने वाला व्यक्ति 'खालसा' कभी नहीं हो सकता। वह अपने गुरु का हुक्म मानने के अलावा अन्य किसी का हुक्म नहीं मानता। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का अपने खालसा को आदेश है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना गुरु मानना है, केवल इसी के आगे अपना शीश झुकाना है, अन्य किसी के आगे कदापि नहीं।

मुगल शासक अकबर के समय उसके मंत्री टोडर मल ने भूमि की बांट जहां प्राऊती, छछर, पोल्ज, बंज़र के रूप में की, वहीं एक आरक्षित भूमि को 'खालसा ज़मीन' कहा। खालसा ज़मीन पर न कोई लगान, न कोई महसूल होता था और उसकी उपज भी मुगल शासक या उसका परिवार ही उपयोग करता था। गुरु जी ने अपने सिक्ख को 'खालसा' कहा, क्योंकि वह तो सीधे तौर पर वाहिगुरु का है तथा उसे यम-जगाती का कोई भय नहीं है। उन्होंने "वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तहि" बुलाने का आदेश दिया। खालसा किसी का निजी दास नहीं है। वह आज़ाद है, सर्व-समर्थ है।

सुप्रसिद्ध सिक्ख विद्वान भाई संतोख सिंघ ने खालसा शब्द के प्रत्येक अक्षर के अर्थ लिखे हैं। उन्होंने लिखा है कि 'खा' के अर्थ हैं-- जप व योगी। 'ल' का अर्थ भोग महि, सांसारिक है। 'सा' का अर्थ सम रहानि माझ, इकट्ठ (संगठन), मेल व संगति है। तीनों मिलकर योग, भोग, मेल का संगम बनाते हैं अर्थात् खालसा रूहानियत, सांसारिक व्यवहार और एकता का प्रतीक है।

फ़ारसी भाषा के पांच अक्षरों को मिलाकर 'खालसा' शब्द बनता है। कोषानुसार 'खे' का अर्थ 'खुद' है। 'अलफ़' का अर्थ अल्लाह अर्थात् अकाल पुरख है। 'लाम' का अर्थ है-- लबैक, जिसका भावार्थ है कि आप मुझसे क्या चाहते हो? मैं हाज़िर हूं और क्या लोगे? 'सवाद' का अर्थ साहिब व मालिक है। 'ह' का भावार्थ आज़ादी या हुमा पक्षी है, जिसके बारे में माना

जाता है कि यह पक्षी जिसके सिर के ऊपर से गुज़र जाए, वह व्यक्ति शहंशाह बन जाता है। अत: खालसा का संपूर्ण (समुचित) अर्थ हुआ कि वाहिगुरु सदैव अपने सिंघ के साथ संपर्क में है। वाहिगुरु और खालसा आपस में सीधी बातचीत द्वारा एक-दूसरे के साथ संबद्ध हैं। वाहिगुरु सदैव कहता है-- "मुझसे क्या लेने की इच्छा रखते हो? मैं हर वक्त हाज़िर हूं। क्या लोगे ?" सिंघ उत्तर देता है-- "मालिक! आज़ादी और सर्व-सामर्थ्य बख़्शिश करो।"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को केशधारी होने का हुक्म दिया और केशों को 'गुरु की मुहर' कहा। साथ में कंघा, कृपाण, कछहिरा, कड़ा धारण करने का आदेश दिया। चार बातों की ओर विशेष ध्यान देने के लिए कहा। पहली बात, केशों का अनादर नहीं करना। दूसरी बात, पर-तन-गामी नहीं होना। तीसरी बात, कुट्ठा नहीं खाना और चौथी बात, (जगत-जूठ) तंबाकू का सेवन नहीं करना। वास्तव में इन बातों को मानकर मन और आत्मा को पवित्र रखा जा सकता है अर्थात् खालसा के बाणे व आचरण में संपूर्ण मानव के स्वरूप को हासिल किया जा सकता है। यूं भी सब तरह के नशों एवं बुराइयों से दूर ही रहना चाहिए।

गुरु जी का फ़रमान है कि पांच ककारों को धारण कर सिपाही (रक्षक) बनने के साथ-साथ संतई (भक्ति) भी हाथ से नहीं गंवानी है। रोज़ाना पांच बाणियां-- जपु, जापु, सवैये, रहरासि एवं सोहिला साहिब का पाठ करना है। वाहिगुरु के सिवाय अन्य किसी का सिमरन नहीं करना है।

संसार के धर्मों के इतिहास में खालसा की साजना के मुकाबिल कोई घटना नहीं मिलती है। खालसा की भांति दुनिया की किसी भी कौम का जन्म-दिन नियत नहीं किया जा सकता। समय गुज़रने के साथ-साथ ही अन्य कौमें अस्तित्व में आईं। गुरु जी ने सन् १६९९ की वैसाखी वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब में एक भारी दीवान सजाकर खालसा पंथ की साजना (स्थापना) की थी यानि मानवता को जात-पात, ऊंच-नीच, भेदभाव से पूर्णत: मुक्ति दिलाई थी। खालसा रूप में संपूर्ण, सर्वश्रेष्ठ मानव के स्वरूप को दुनिया के रू-ब-रू किया था। गुरु जी ने खालसा सजाकर सिक्खों को गौरवमयी जीवन व्यतीत करने का सलीका सिखा दिया। सिक्ख धर्म केवल उसूलों का पुलिंदा-मात्र नहीं है, बल्कि यह तो जीवन को सार्थक बनाने का ढंग है। श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्ख कौम का महल संगत और पंगत के सिद्धांत पर खड़ा किया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्ख कौम को 'खालसा' के रूप में संपूर्ण स्वरूप प्रदान कर दिया। उन्होंने बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में सत्कार प्रदान किया तथा संगत को खालसा बनाया अर्थात् बाणी और बाणे को अभेद बना दिया। खालसा फ़ौज ने एक भी युद्ध अपने निजी स्वार्थ के लिए नहीं लड़ा, सभी युद्ध धर्म, न्याय, मानवता के कल्याण व उत्थान के लिए और सच्चाई के लिए लड़े हैं।



खालसा पंथ और राष्ट्रीय एकता

-डॉ. हरमहेंद्र सिंघ*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी (१६६६-१७०८ ई) इस संसार में एक विशेष उद्देश्य को लेकर आए थे। डॉ. सुरिंदर सिंघ के अनुसार, "अकाल पुरख ने उन्हें मानव जाति की मुक्ति के लिए विशेष उत्तरदायित्व देकर भेजा था। उस अकाल पुरख की आज्ञा पाकर ही देवता आदि प्रकट हुए हैं।"

काल ही पाइ भयो भगवान सु जागत या जग जा की कला है ॥
काल ही पाइ भयो ब्रहमा सिव काल ही पाइ भयो जुगीआ है ॥
काल ही पाइ सुरासुर गंध्रब जच्छ भुजंग दिसा बिदिसा है ॥
और सुकाल सभै बस काल के एक ही काल अकाल सदा है ॥८४॥१॥ (बचित्र नाटक)

गुरु जी का जन्म सत्य-धर्म का प्रचार-प्रसार करने तथा अत्याचार का नाश करने के लिए हुआ था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने देशवासियों पर हो रहे अत्याचारों का गंभीर रूप से चिंतन किया। गुरु जी ने देखा कि मुगलों ने सारे देशवासियों में अत्याचारों द्वारा आतंक फैला रखा है। लोगों में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए उन्होंने खालसा पंथ की नींव रखी जो कि एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य था। स. जे. एस. (ग्रेवाल) के शब्दों में, "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन में कोई घटना इतना महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं रखती, जितना कि खालसा पंथ का निर्माण करना।" वस्तुतः सिक्ख इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण घटना 'खालसा पंथ की सृजना' ही है, जिसने मानव जाति के एक नये स्वरूप को जन्म दिया। इस महान घटना के पश्चात सिक्खों ने एक अद्वितीय इतिहास रचा। डॉ. भगत सिंघ के अनुसार, "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने समय में एक खास मनोरथ को सामने रखकर महान कार्य पूर्ण सफलता के साथ किया। यह पग उठाकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मनुष्यता के पिछड़े वर्ग को वीर सैनिकों में बदल दिया, पद-दलित लोगों को नया जीवन दिया और सिक्खों को मुगल अत्याचार के विरुद्ध वीरता से लड़ने के लिए तैयार किया।"

सन् १६९९ ई की वैसाखी के दिन गुरु जी ने एक महत्त्वपूर्ण काम किया। गुरु जी ने इस महान दिन खालसा पंथ की स्थापना करके सिक्खों को नया स्वरूप प्रदान किया।

गुरु जी ने जब धर्म व राष्ट्रीय गौरव के लिए युद्ध लड़े थे तो उन्होंने घोषणा की थी कि जब सभी शांतमयी तथा अन्य प्रकार के ढंग असफल हो जाएं तो अत्याचार का नाश करने के लिए तेग का संबल उचित है। उन्होंने अनुभव किया कि तेग ही अकाल पुरख और अकाल पुरख ही तेग है।

पूर्व गुरु साहिबान ने मसंद-प्रथा (मसनदों की पद्धति) आरंभ की थी। बहुत समय तक यह प्रथा सफलतापूर्वक चलती रही। इन मसंदों ने चढ़ावे की रकम का गलत प्रयोग करना आरंभ कर दिया था। अनेक मसंद मनमर्जी करने लग गए थे। इन मसंदों के स्थान पर विश्वासपात्र

*१२५, कबीर पार्क, जी. टी. रोड़, श्री अमृतसर-१४३००१, मो: ९३५६१३३६६५

और पूर्ण भक्ति वाले अनुयायियों के लिए खालसा पंथ का निर्माण आवश्यक था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय औरंगजेब का राज्य था। औरंगजेब के अत्याचारों के कारण श्री गुरु तेग बहादर साहिब को बलिदान देना पड़ा। श्री गुरु नानक देव जी ने सबसे पहले बाबर के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की यह इच्छा थी कि लोगों में सामूहिक रूप से नई चेतना डालकर उनसे अत्याचार का सामना करवाया जाए। इस कारण उन्होंने एक नये पंथ की नींव रखने का विचार किया।

डॉ. जयभगवान गोयल के अनुसार, "खालसा पंथ की स्थापना पंजाब के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस पंथ के माध्यम से दशम गुरु जी ने पंजाब के जनजीवन को एक नयी दिशा प्रदान की, उसमें एक नयी स्फूर्ति एवं गति उत्पन्न की और एक नयी प्राणवान-शक्ति का संचार किया। सेवा और त्यागमय जीवन व्यतीत करने वाले सिक्ख अनुयायियों को साहस एवं वीरता का जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया।" डॉ. गोकुल चंद नारंग के अनुसार, "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने साधारण कृषक को अद्भुत वीर बना दिया और उसमें अत्याचारी एवं अन्यायपूर्वक शासन के विरुद्ध खड़े होने की शक्ति पैदा कर दी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इन सिक्खों को एक खास प्रकार का जीवन व्यतीत करने के लिए कहा।" स. प्रीतम सिंघ (गिल्ल) के शब्दों में, "राष्ट्रीय एकता पैदा करने के लिए प्रमुख भूमिका खालसा के निर्माण की थी। ये वे लोग थे जो एक खास ढंग से चुने गये थे, उनको खास प्रशिक्षण दिया गया था"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने शिष्यों में नये जीवन का संचार चाहते थे और वे चाहते थे कि आवश्यकता पड़ने पर उनके सिक्ख तेग लेकर समाज और धर्म की रक्षा कर सकें। इसके लिए उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब में सभी सिक्खों की एक आम सभा बुलाई। इसके लिए 'हुकमनामा' दूर-दूर स्थानों पर भेजा गया। सिक्ख १६९९ ई की वैसाखी के पर्व पर श्री आनंदपुर साहिब में बहुत बड़ी संख्या में इकट्ठा हुए।

गुरु जी ने हाथ में तेग लिए भरी सभा में कहा, "आप में से कोई ऐसा है जो धर्म के लिए अपना सिर दे सके।" सारी सभा में सन्नाटा छा गया। तब एक लाहौर निवासी भाई दया राम उठा। गुरु जी उसे तंबू में ले गये। खून से भरी तेग लेकर लौटे। इस प्रकार एक के बाद दूसरे, दूसरे के बाद तीसरे, फिर चौथे और फिर पांचवे सिर की मांग की। भाई दया राम के बाद दिल्ली निवासी भाई धरम दास, फिर द्वारिका निवासी भाई मुहकम दास, बिदर निवासी भाई साहिब चंद और द्वारिका भाई हिंमत राय ने प्रसन्नतापूर्वक अपने को प्रस्तुत किया। अमृत तैयार हुआ और उन पांचों को छकाया। ये प्रथम पांच अमृतधारी सिक्ख 'पांच प्यारे' कहलाए। गुरु जी ने इन पांचों के नाम के साथ 'सिंघ' शब्द लगाया तथा फिर उनसे खुद भी अमृत छका। इस प्रकार इस दिन हज़ारों की संख्या में सिंघ सजे। इस संगठन को 'खालसा' का नाम दिया गया।

खालसा के निर्माण से न केवल गुरु जी के अनुयायियों में वृद्धि हुई बल्कि वे वीर योद्धा और साहसी भी बने। डॉ. महीप सिंघ लिखते हैं, "इस प्रकार गुरु जी ने अपने विनीत शिष्यों को शेर बना दिया और क्षण भर में उनकी पदवी सर्वोत्कृष्ट तथा सबसे अधिक वीर लोगों के

समान उच्च कर दी।" स्पष्ट है कि गुरु जी ने खालसा की स्थापना करके अपने अनुयायियों को महान, वीर और शेर बना दिया।

खालसा की स्थापना से सिक्खों की भावनाओं और विचारों पर बहुत प्रभाव पड़ा। गुरु जी ने कहा कि उनके शिष्य ऊंच-नीच तथा जात-पात के भेद को नहीं मानेंगे और एक ऐसे समाज का निर्माण करेंगे जो इन भेदों से दूर होगा। गुरु जी ने खालसा का निर्माण करके सिक्खों में फूट न पड़ने दी और उनमें एकता स्थापित की। उनके आदर्श और आकांक्षाएं एक समान थीं। गुरु जी ने बहुत सोच-विचार करके इस नयी व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयत्न किया। स. गोपाल सिंघ के अनुसार, "अब तक इस पंथ में ऐसे हर एक का स्वागत था जो जात-पात का भेदभाव त्यागकर, पद या धर्म की चिंता किए बिना मानव-मात्र की सेवा करने को तत्पर था; जो एक ईश्वर में विश्वास करता था और सब प्रकार के छल-कपट एवं पाखंड से दूर था और अपने विचारों एवं कर्म से पवित्र था। यह शांतिप्रिय और धर्मनिष्ठ लोगों का समाज था।" स्पष्ट है कि खालसा की स्थापना का उद्देश्य गुरु जी का जाति-विहीन समाज का निर्माण करना था। सभी लोगों में भ्रातृत्व की भावना पैदा कर एक ऐसे समाज की स्थापना करना था जो इन भेदभावों से दूर रह सके।

खालसा की स्थापना से समाज में परिवर्तन आ गया। जो लोग मानव जाति का व्यर्थ अंश समझे जाते थे वे अमृत रूपी शक्ति से विचित्र बना दिए गए। मि. कनिंघम के अनुसार, "(तथाकथित) भंगी, चमार, नाई और हलवाई, जिन्होंने तेग पर हाथ भी नहीं रखा था, जिनके पूर्वज (तथाकथित) उच्च श्रेणियों के दास बने रहते थे, गुरु जी के नेतृत्त्व में शूरवीर, योद्धा बन गए।" स्पष्ट है कि गुरु जी ने खालसा पंथ की स्थापना करके सभी व्यक्तियों को शूरवीर बना दिया। ये सभी खालसा सिपाही हर समय अपने गुरु जी के आदेश पर मृत्यु का आलिंगन करने के लिए तैयार हो गए।

अंधविश्वासों और जात-पात के नाम पर भेदभावों को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खत्म किया जो राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा थे। उन्होंने अमृत-पान करवाकर प्रत्येक सिक्ख के नाम के बाद 'सिंघ' और स्त्री के नाम के बाद 'कौर' लगाने के लिए कहा।

अब सिक्खों के कर्त्तव्य आध्यात्मिक क्षेत्र तक ही सीमित न रहे, अपितु सैनिक क्षेत्र में भी हो गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बताया कि अत्याचारियों को समाप्त करने के लिए यदि तेग चलानी पड़े तो कोई बुरी बात नहीं है। इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने संत-सिपाहियों की श्रेणी तैयार की। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने नयी नीति के अनुसार संत-सिपाही वाला स्वरूप अपनाया था, परंतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने प्रभु-भक्ति के साथ-साथ कृपाण को धर्म का आवश्यक अंग बनाकर सिक्ख धर्म को संत-सिपाहियों का धर्म बना दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने अनुयायियों को यह सख़्त चेतावनी दी थी यदि उनमें आधारभूत सभ्यता और भक्ति की भावनाएं नहीं हैं तो उनकी आध्यात्मिक तथा सैनिक शक्ति व्यर्थ जायेगी। स्पष्ट है कि खालसा की स्थापना करने का गुरु जी का मिशन अन्याय और अत्याचारों का सामना करते हुए सिक्खों में भक्ति और शक्ति की भावनाओं का संचार करना था। खालसा की स्थापना से गुरु जी का यह उद्देश्य पूरा हुआ।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भारतीय संस्कृति

के महान उद्धारक एवं पोषक थे। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए उन्होंने कवियों को लगाया। नारायण भक्त के अनुसार, "उनका (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) प्रधान लक्ष्य यही था जिससें राष्ट्रीय साहित्य का निर्माण हो। ऐसा राष्ट्रीय साहित्य, जिससे मुर्दों में संजीवनी शक्ति का संचार हो सके, जिससे वे अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार कर सकें।" इससे स्पष्ट है कि गुरु जी ने अपने साहित्य द्वारा अत्याचार और अन्याय का सामना करने की शक्ति पैदा की।

गुरु जी का व्यक्तित्त्व भारतीय संस्कृति के जीवन-दर्शन से बना एक सशक्त रूप है। गुरु जी की बाणी विविध विषयों को अपने में समाहित करने की शक्ति रखती है। उनकी बाणी में भारतीय काव्य-शास्त्र के अनुसार सभी रसों का समावेश हुआ है। उनकी साहित्यिक गरिमा यह है कि उनमें विषय के अनुरूप भावों को वर्णित करने की शक्ति थी। उनके बाणी-संग्रह का नाम 'दसम ग्रंथ' है।

गुरु जी के सारे बाणी-साहित्य में भारतीय संस्कृति के तत्व बिखरे हुए हैं। उन्होंने अपने साहित्य से ही भारतीय दर्शन की स्थापना की है।



फार्म-४, नियम-८

१.	प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
२.	प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की पहली तारीख
३.	मुद्रक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
४.	प्रकाशक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
५.	संपादक का नाम	:	स. सिमरजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	संपादक, गुरमति ज्ञान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
६.	मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर

मैं सिमरजीत सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी अनुसार पूर्णत: सही है।

तारीख-०१/०४/२०१४

हस्ताक्षर/-
(सिमरजीत सिंघ)
संपादक, गुरमति ज्ञान।

अमृत के दाते : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

-डॉ. रछपाल सिंघ*

दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसा महाबली और ब्रह्मज्ञानी दुनिया भर के इतिहास में न तो कभी हुआ है और न ही होगा। जिनका सब कुछ अकाल पुरख को समर्पित है और दोनों में रत्ती भर भी भिन्न-भेद नहीं है, उन्हीं का नाम है, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी। अकाल पुरख की बख़्शिशों के मालिक तथा तेज प्रताप के मालिक हैं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी। लोक-परलोक में सहायता करने वाले, पूर्ण कृपालु, सच्चे प्रभु का संपूर्ण भेद जानने वाले हैं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी :

नासिरो मनसूर गुर गोबिंद सिंघ।
ईज़दि मनज़ूर गुर गोबिंद सिंघ ॥१०५॥
हक्क रा मंज़ूर गुर गोबिंद सिंघ।
जुमला फ़ैज़ि नूर गुर गोबिंद सिंघ ॥१०६॥
(गंजनामा, भाई नंद लाल जी)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी वो आइना हैं, जिसमें से पावन और निरवैर प्रभु के दर्शन हो सकते हैं। वे शाही और फकीरी दोनों वेशभूषा में रह सकने वाले परम पुरख हैं :

ख़ालिसो बे-कीना गुर गोबिंद सिंघ।
हक्क हक्क आईना गुर गोबिंद सिंघ ॥१२४॥
हक्क हक्क अंदेश गुर गोबिंद सिंघ।
बादशाह दरवेश गुर गोबिंद सिंघ ॥१२५॥
(गंजनामा, भाई नंद लाल जी)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अकाल पुरख की कृपा से खालसा पंथ की स्थापना की। पांच ककारों के धारक महाबली गुरु जी ने खड़ग से दुष्टों का नाश किया। 'वाहिगुरु जी की फ़तहि' बुलाकर बड़े-बड़े युद्ध जीत लिए। महान संत, शूरवीर के आगे कोई भी ठहर न सका। उनके रणजीत नगाड़े की गूंज और सिंघों के गड़गज जैकारों ने बड़े से बड़े पहाड़ों को भी हिलाकर रख दिया :

उहु गुरु गोबिंद होइ प्रगटिओ दसवां अवतारा।
जिन अलख अपार निरंजना जपिओ करतारा।
सिर केस धारि, गहि खड़ग को सभ दुसट पछारा।
सील जत की कछ पहरि पकड़ो हथिआरा।
सच फ्ते बुलाई गुरू की जीतिओ रण भारा। . . .
(वार ४१:१५)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा तैयार की गई अकाल पुरख की फौज (खालसा) में यह विशेष गुण है कि वो मैदान-ए-जंग में पुर्जा-पुर्जा कट तो सकती है पर मैदान छोड़कर नहीं भागती। पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का वचन है, "घर आए मेहमान के लिए 'देग' और सिरफिरे व्यक्ति के लिए 'तेग' हर गुरसिक्ख के घर पर सदा तैयार मिलनी चाहिए।" गुर-उपदेश है कि "अगर धर्म-युद्ध छिड़ जाए तो गुरु-भरोसे पर दृढ़ रहना, कभी झुकना नहीं, उसूलों से कभी समझौता नहीं करना। गुरु तो सिक्ख के सदा अंग-संग है।" गुरु की खालसा फौज किसी औरत और बच्चे पर हाथ नहीं उठाती। न तो वो किसी की धन-दौलत पर नज़र रखती है और न ही किसी को गलत

*पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर-१४३५२१

निगाह से देखती है। सिंघ शूरवीरों की उनके गुरु द्वारा बख़्शी हुई सरदारी की शान विलक्षण है। वास्तव में सिंघों के जती-सती, धर्मी, नाम-अभ्यासी होने और गुरबाणी में दृढ़ विश्वास का परिणाम ही था कि इन्होंने बड़े-बड़े अहंकारियों का नामो-निशान तक मिटा दिया और सिक्खी की शान में बढ़ोतरी की।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसा विश्व भर में ऐसा कोई व्यक्तित्व नहीं है, जिसने अपनी पूरी ज़िंदगी, समूचा परिवार देश और धर्म के लेखे लगाकर प्रभु का शुक्राना किया हो। गुरु जी के चारों साहिबज़ादों की शहीदी सिक्ख पंथ की महान शहीदी परंपरा का एक अटूट अंग बन गई। सिक्ख पंथ की इसी शहीदी लहर में से ही खालसा पंथ अर्थात् अकाल पुरख की फौज का उदय हुआ। कमज़ोर दिल या कायर बन चुके लोग खंडे-बाटे का अमृत छककर मैदान-ए-जंग में सवा-सवा लाख से मुकाबला कर सकने के समर्थ हो गए। अमृत के दाते गुरु जी द्वारा बख़्शे अमृत में इतनी ताकत थी कि इसने सदियों से अन्याय और जब्र की मार झेल रही तथा स्वाभिमान खो चुकी जनता को जगाने का काम किया। वे लोग, जो कभी चाकू-छुरी पकड़ने से भी डरते थे, खंडे की पाहुल छक कर, हाथ में तेग लिए दुश्मनों के साथ शेरों की भांति लड़े और अपनी जान की जरा भी परवाह न की। किसी शायर के बोल हैं :

पता नहीं की बाटे विच, घोल के पिला गिआ।
मोई हुई कौम ताईं, आण के जिवा गिआ।

गुरु साहिब ने बाटे में जल डालकर, उसमें खंडा फेरा, मुख से बाणी-पाठ किया। उस तैयार अमृत में अकाल पुरख की बख़्शिश से इतना बल, इतना जोश भर गया कि बलहीन लोगों में अमृत-पान करने के बाद जोश का ज्वालामुखी दहकने लगा। दुनिया के इतिहास में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। बाबा दीप सिंघ जी, भाई तारू सिंघ जी, भाई मनी सिंघ जी, बाबा बंदा सिंघ बहादर आदि योद्धा इसी अमृत की शक्ति से शत्रु-दल पर भारी रहे तथा जुल्म व जब्र का मुंहतोड़ जवाब देते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

गुरु के सिंघ चरखड़ियों पर चढ़ाए गए, तोपों से उड़ा दिए गए, मगर उनका सिक्खी-सिदक सदैव अडोल रहा। धन्य हैं ऐसे सिंघ-सिंघणिआं और उनसे भी धन्य हैं उनको सजाने वाले दशमेश गुरु।

ऐसे महान परम पुरख थे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, जिनकी एक कलम क्या हज़ारों कलमें भी प्रशंसा नहीं लिख सकती। नि:संदेह, दशमेश पिता जी की महिमा अकथ्य है, अपरंपार है। ❁

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

खालसा मेरो रूप है खास

*-स. अमरजीत सिंघ**

अनीति, अन्याय और अत्याचार के तांडव को रोकने के लिए सच्चे मार्ग का निर्देशन कर, पाप रूपी अंधेरे में सत्य रूपी प्रकाश दिखाकर सीधे मार्ग प्राणियों को ले जाने के लिए संवत् १७२३ बिक्रमी के मुताबिक सन् १६६६ ई में बिहार के पटना शहर में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म हुआ। अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब के बलिदान के बाद नौ वर्ष की अल्प आयु में ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को गुरगद्दी का कार्यभार संभालना पड़ा। यह काल गुरु जी की कठोर परीक्षा का समय था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को विषम हालात में कृपाण उठानी पड़ी एवं जालिमों का संहार करना पड़ा। इतिहास साक्षी है कि जितने युद्ध गुरु जी द्वारा किए गये वे सभी युद्ध आत्म-रक्षा एवं दुष्टों का संहार करने के लिए किए गये थे। इसमें से एक भी युद्ध ऐसा न था जो गुरु जी ने कुछ हथियाने के लिए किया हो। यह विश्व का अनूठा उदाहरण है।

यह वो काल था जब औरंगजेब की कट्टर धर्मांधता के कारण देश की दुर्दशा हो रही थी। यही नहीं, औरंगजेब की हर किसी को जबरदस्ती इसलाम धर्म कबूल करवाने की नीति से देश भर में त्राहि-त्राहि मची हुई थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बढ़ती ख़्याति को भांपते हुए कहलूर के राजा भीम चंद और श्रीनगर के राजा फ्तेह शाह गढ़वालिया द्वारा गुरु जी पर आक्रमण किया गया। गुरु जी के पठान सिपाही, जो उनके हितैषी बनते थे, उन्हें धोखा दे गये। ऐसे समय में पीर बुद्धू शाह ने अपने दो भाई, चार बेटे एवं १० शिष्यों सहित आकर गुरु जी की मदद की।

सन् १६९९ में गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ का गठन किया। उनके द्वारा सिक्खों को दिए विलक्षण रूप के कारण आज सिक्ख लाखों में भी पहचाना जा सकता है। गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब में वैसाखी के दिन विशाल एकत्रता का आयोजन कर उसमें से पांच प्यारों का चयन किया तथा खालसा पंथ की सृजना की। पांच प्यारों को अमृत छकाने के बाद गुरु जी ने स्वयं भी उनसे अमृत छका। गुरु जी ने कथन किया :

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे में हउं करउं निवास।

गुरु जी ने बताया कि सारी मानव जाति एक समान है। धर्म अथवा जाति के नाम पर भेदभाव करना गलत है-- *"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥"* अपने इस उद्देश्य द्वारा गुरु जी साबित करना चाहते थे कि जातिगत भेदभाव को मिटाकर ही हम संगठित रूप से जालिमों के जुल्म को रोक सकते हैं।

गुरु जी ने खालसा के लिए केश, कंघा, कछहिरा, कड़ा व कृपाण धारण करना अनिवार्य बताया। गुरु जी ने अपने समय में प्रचलित वहमों-भ्रमों का खंडन किया :

मंत्र जंत्र अरु तंत्र सिधि जौ इन महि कछु होई ॥
हज़रति है आपहि रहहि मांगत फिरत न कोइ ॥
जो इन मंत्र जंत्र सिध होई ॥
दर दर भीख न मांगे कोई ॥

कुरीतियों का खंडन कर गुरु जी ने चरित्र-निर्माण पर ज़ोर दिया। गुरु जी का कहना था कि चरित्र ही ऐसा शस्त्र है जो कठिन से कठिन समय में साथ देता है। गुरु जी का जीवन संघर्षों से भरा था। उनका कहना था कि अनेक बाधाओं के होते हुए भी अंतिम विजय सच की ही होती है।

**३०/३, मोहिनी रोड, देहरादून-२४८००१, मो ९४१२०५६६७२*

सन् १९१९ की वैसाखी

-*सिमरजीत सिंघ**

पंजाब की धरती शुरू से ही रूहानी अनुभवियों, योद्धाओं व शूरवीरों की धरती रही है। पश्चिम की तरफ से हिंदोस्तान पर चढ़कर आने वाले हमलावरों का मुकाबला पंजाब के शूरवीर योद्धे ही सबसे पहले करते आए हैं। जब समूचे भारत ने गुलामी की ज़ंजीरों को लगभग प्रवान ही कर लिया था तथा सदियों तक समूचे देशवासी पराधीनता को अपनी तकदीर समझकर, सिर झुकाकर जीवन बसर कर रहे थे, उस समय में गौरव व स्वाभिमान की पुकार इसी धरती से श्री गुरु नानक देव जी ने देकर समूह देशवासियों को गुलामी की नींद से झकझोर कर जगाया था। शायर इकबाल ने इस सम्बंध में लिखा है :

फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से।
हिंद को एक मर्द-ए-कामिल ने जगाया ख्वाब से।

श्री गुरु नानक देव जी ने देशवासियों की गुलाम मानसिकता को बदलने हेतु मध्य युग में पहली बार महान यत्न किए। गुरु जी ने लोधी शासकों की जाबर एवं अन्याय पर आधारित नीतियों का खंडन किया, हमलावर बाबर व उसकी बेमुहारी फौज द्वारा जनसाधारण पर जुल्म ढाने के कारण बेबाकी से उसके मुंह पर सच सुनाया तथा गुलामी की ज़ंजीरें काटने के लिए सिक्ख लहर को संस्थागत व संगठनात्मक आधार प्रदान किया, जिस पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई संवत् नानकशाही २३१ की वैसाखी को खंडे-बाटे का अमृत-पान करवाकर खालसा सृजना का कार्य कर दिखलाया। इस गुरु-साजे खालसा ने देश- कौम की गुलामी के बंधन तार-तार कर दिए। गुरु जी का थापड़ा लेकर बाबा बंदा सिंघ बहादर ने ज़ालिम मुगल साम्राज्य की जड़ें हिलाकर खालसाई झंडे झुला दिए तथा सिक्ख राज्य की नींव रखी। सिक्ख मिसलें एवं महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा स्थापित ख़ालसा राज्य ने एक न्याय आधारित राज्य कायम करके दुनिया में मिसाल पैदा की। जब अन्य सारे भारत पर अंग्रेजी साम्राज्य काबिज़ हो चुका था, तब भी पंजाब के निवासी महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य में आज़ादी का आनंद ले रहे थे। महाराजा रणजीत सिंघ के जीते-जी उनकी पंजाब की तरफ आंख उठाने की भी हिम्मत नहीं पड़ी। महाराजा के परलोक गमन करने की देर थी कि वे गुलाब रूपी पंजाब के इर्द-गिर्द मंडराने लगे और अपनी करूर चालें चलकर कुछ सालों में ही पंजाब पर कब्ज़ा कर लिया। पंजाबियों खासकर सिक्खों ने अंग्रेज़ी साम्राज्य की गुलामी को बड़े दुखी दिल से स्वीकार किया। गुरु साहिबान द्वारा संचारित राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, सभ्याचारक, मानसिक तथा आत्मिक आज़ादी का स्वाद चख चुके सिक्ख चुप कैसे बैठ सकते थे, जिस लिए गदर लहर जैसी आज़ादी की लहरों में पंजाबियों ने बढ़-चढ़कर कुर्बानियां दीं। इससे पूर्व नामधारी सिक्ख लहर ने अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध एक मज़बूत आधार वाला अपना स्वतंत्र सामाजिक, धार्मिक तथा सभ्याचारक सिस्टम विकसित कर आज़ादी के प्रति समूह पंजाबियों तथा सिक्ख कौम के भावों की तर्जमानी की। १९१९ ई संवत् नानकशाही ४५१ की वैसाखी वाले दिन जलियां वाला बाग में हुए खूनी साके का सही-सही अध्ययन तथा विश्लेषण करने के लिए गुरु साहिबान की अगुआई में पंजाब की धरती पर सोलहवीं सदी के आरंभ में चली मानवीय आज़ादी

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

की लहर की यह संक्षिप्त पृष्ठभूमि काफी हद तक सहायक सिद्ध होती है।

१७वीं सदी के आरंभ में अंग्रेज, फ्रांसीसी तथा पुर्तगाली हिंदोस्तान में व्यापार करने के लहजे से आए, परंतु कुछ समय के बाद भारत पर कब्ज़ा ही कर लिया। अंग्रेजों ने पुर्तगालियों को भारत से निकाल दिया तथा भारत पर अपना कब्ज़ा कर लिया और भोले-भाले भारतीयों की लूट-खसूट करने लगे। संसार की प्रथम लड़ाई के समय भारतीयों ने अंग्रेजों की सहायता यह सोचकर की कि शायद वे भारत को आज़ाद कर देंगे। दूसरा कारण आर्थिक स्थिति में खुशगवार तबदीली की कामना भी थी। जंग से पहले भारत बहुत बड़े आर्थिक संकट से गुज़र रहा था। पंजाब के ८३ प्रतिशत किसान कर्ज़ तले बुरी तरह से दबे हुए थे तथा ४५ प्रतिशत ज़मीन गिरवी थी। खुशगवार जीवन की आशा में पंजाबियों को बहुत बड़ी कीमत अदा करनी पड़ी। अकेले पंजाब में से १२,७९४ फौजी शहीद हुए, २४,७३२ से ज्यादा गुम हुए, जख़्मी हुए, कैदी हुए या लापता करार दिए गए। जब जंग खत्म हुई तो भारत को आज़ाद करने की जगह अंग्रेज उसको गुलाम रखने के नये ढंग ढूंढने लगे। पंजाब में ज्यादा संख्या सिक्खों की थी, जिनको दशम पातशाह जी ने १६९९ ई. की वैसाखी को खंडे-बाटे की पाहुल छकाकर सदा के लिए अकाल पुरख के अधीन कर दिया था, इसलिए उनको किसी व्यक्ति विशेष का गुलाम रहना मंजूर नहीं था। देश की आज़ादी में ८० प्रतिशत शहीदियां देने वाले सिक्खों ने आज़ादी के नारे लगाए तथा आज़ादी के संघर्ष का आधार बांधा। अंग्रेजों द्वारा उनको दबाने के लिए नये-नये कानून तथा रोलट एक्ट नाम का काला कानून बनाया गया। भारतीयों ने इस काले कानून का बढ़-चढ़कर विरोध किया। इस सम्बंध में ६ अप्रैल को हड़ताल करने का फैसला किया गया, परंतु सरकार ने श्री अमृतसर के लीडर डॉ. सत्यपाल को २९ मार्च को घर में कैद कर दिया। ३० मार्च को एक पब्लिक जलसा हुआ। डॉ. सैफूदीन किचलू ने रोलट एक्ट के बारे में लोगों को अवगत करवाया और इसका विरोध करने की प्रेरणा की। उसी रात श्री अमृतसर के अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने डॉ. किचलू को हुक्म सुना दिया कि वे अगले हुक्म तक श्री अमृतसर की हद से बाहर नहीं जा सकते और न ही कोई राजनीतिक लिखा-पढ़ी कर सकते हैं। प्रेस को बयान देने तथा जलसे-जलूस में शामिल होने की उन पर पाबंदी लगा दी। ऐसे ही नोटिस और कई अगुओं को भेजे गए। ६ अप्रैल को श्री अमृतसर में ऐसी हड़ताल हुई कि सरकारी आदमियों के बिना किसी ने चूल्हा तक नहीं जलाया। १० अप्रैल को सरकार द्वारा डॉ. किचलू व डॉ. सत्यपाल को कार में बिठाकर श्री अमृतसर शहर से बाहर भेज दिया गया। लोगों ने विरोध किया और वे डिप्टी कमिश्नर की कोठी के सामने रोष ज़ाहिर करने के लिए इकट्ठा होकर जाने लगे तो रास्ते में उनको फौज ने घेर लिया और अंधाधुंध गोलियां चलायीं, जिसमें २० आदमी मौके पर ही परलोक सिधार गए। जख़्मियों का इलाज करने वाले डॉक्टरों को डिप्टी कमिश्नर द्वारा उनको मरने देने के लिए कहा गया या फिर अपना इलाज खुद करने के लिए कहा गया था। जनाना अस्पताल के पास एक डॉक्टर केदार नाथ रहता था। वह कुछ कौमप्रस्ती के विचार रखता था। कुछ आदमियों के कहने पर लोग जख़्मियों को उठाकर उनके घर की तरफ चल पड़े। लोगों ने इसके विरोध में वैसाखी वाले दिन लाला कन्हैया लाल की अध्यक्षता तले जलियां वाला बाग में जलसा करने का फैसला किया। लाला कन्हैया लाल शहर का गणमान्य अधिवक्ता था। उसकी उम्र ७२ वर्ष के लगभग थी तथा उसका शहर में बहुत सत्कार था। आस-पास के सारे इलाकों में ढिंढोरा पीटकर एलान किया गया कि वैसाखी वाले दिन जलियां वाला बाग में जलसा होगा। जलियां वाला बाग किसी समय भाई

हमीत सिंघ जल्हा वालियां की मलकियत थी। वह राजा जसवंत सिंघ नाभा का दरबारी तथा महाराजा रणजीत सिंघ की सेवा में वकील रह चुका था। जल्हा उसकी गोत्र थी तथा इस जगह उसका बाग था। साके वाले दिनों में इस बाग वाली जगह को लोग कूड़ा-कर्कट फेंकने के लिए प्रयोग करते थे तथा श्री अमृतसर शहर के बूढ़े से बूढ़े निवासी को भी याद नहीं था कि यहां कोई बाग होता था। यह जगह शहर के तल से नीची, शहर के बिलकुल मध्य तथा टेढ़ी-मेढ़ी गलियों से घिरी हुई थी। यह खुली ऊबड़-खाबड़ चौरस जगह थी। इसका क्षेत्रफल १२ बीघा होगा। मकानों के पिछवाड़ों से और भद्दी-सी दीवार के टूटे-फूटे टुकड़ों में घिरी यह जगह चौखंडी लगती है। कई जगह पर इर्द-गिर्द के मकानों की दीवारें इसके भीतर धंस आई थीं। इस जगह से बाहर आने के तीन या चार रास्ते थे, जहां से लोग आसानी से आ-जा सकते थे। घरों के मध्य कई स्थानों पर इसकी दहलीज़ इतनी नीची थी कि आदमी खड़ा होकर उस ओर देख सकता था। इसका आम रास्ता इतना तंग था कि दो आदमी बड़ी मुश्किल से फंसकर लांघ सकते थे। इसके बिलकुल सामने सौ फुट की दूरी पर मकान की जगह केवल पांच फुट ऊंची ईटों एवं गारे की एक दीवार खड़ी थी तथा दाईं ओर एक और नीची कच्ची दीवार थी। इनके मध्य वाली जगह एक गुंबद वाली खसता हालत में भाई जल्हे की यादगार बनी हुई थी। बंद कुएं के पास वृक्षों के नीचे फूटे हुए मिट्टी के बर्तनों के ठीकरों के ढेर लगे हुए थे।

सन् १९१९ ई की १३ अप्रैल को श्री अमृतसर में वैसाखी का त्योहार था। लोग दूर-दूर से श्री दरबार साहिब के पावन सरोवर में स्नान करने के लिए पहुंच रहे थे। लोहगढ़ तथा हाथी दरवाजों के बाहर माल मंडी लगी हुई थी। काबुल तक के व्यापारी पहुंचे हुए थे। उस समय पंजाब का गवर्नर सर माइकल ओडवायर था तथा सारा शहर जनरल डायर के हवाले किया हुआ था। जनरल डायर ने एलान कर दिया था कि श्री अमृतसर शहर की हद में कोई भी जलसा-जलूस नहीं किया जा सकता। जब बाग आदमियों से भर गया तो शाम ४ बजे श्री हंस राज ने प्रधानगी के लिए डॉ. किचलू की तसवीर कुर्सी पर रखी तथा अपनी तकरीर में बताया कि कैसे दस तारीख को अपने लीडरों की रिहायी की मांग करने गए लोगों पर गोली चलायी गयी। एक प्रस्ताव पारित करने के लिए भी कहा गया जिसमें रोलट एक्ट को रद्द कर देने की मांग की गयी थी। श्री गोपी नाथ ने एक कविता पढ़ी तथा मुख्य वक्ता लाला कन्हैया लाल वकील ने भी भावपूर्ण ढंग से लोगों को संबोधित किया। जनरल डायर अपने फौजी जवानों को साथ लेकर शहर में दाख़िल हो गया। उसकी कार के आगे घुड़सवार पुलिस, एक कार में वह खुद तथा मेजर ब्रिगज़, दूसरी में एस. पी. रीहल व डी. एस. पी. पलोमर थे। आगे-पीछे ९० हथियारबंद फौजी तथा मशीनगन वालों की दो हथियारबंद मोटरें उनके साथ थीं तथा वह जलियां वाला बाग के पश्चिमी दरवाज़े के आगे आ गया। फौजी जवानों के पास तोप भी थी परंतु जलियां वाला बाग का दरवाज़ा सिर्फ साढ़े सात फुट चौड़ा था और इतना तंग था कि तोप भीतर नहीं जा सकती थी। उसको अपनी आर्म्ड कारें बाहर ही खड़ी करनी पड़ीं। उसने अपने जवानों को हुक्म किया तथा ५० राईफलों से लैस जवान अंदर चले गये। बाग के दरवाज़े के आगे एक ऊंची जगह थी जिस पर डायर खुद खड़ा हो गया। जलसा नीची जगह पर हो रहा था, इसलिए इस जगह से सब नज़ारा पूरी तरह से नज़र आ रहा था। एक आदमी भाषण दे रहा था। अन्य सभी चुपचाप बैठे उसका भाषण सुन रहे थे। स्टेज पर श्री दुर्गा दास, राए राम सिंघ, स. दारा सिंघ, जनाब अब्दुल मजीद, श्री हंस राज, श्री गोपी नाथ तथा श्री गुरबख़श राय आदि बैठे थे। भाषण सुनने वालों में बच्चे-बूढ़े

तथा औरतें शामिल थे। कई औरतों ने बच्चे भी गोद में बिठाए हुए थे। जनरल डायर ने बिना किसी चेतावनी के अपने जवानों को गोली चलाने का हुक्म दे दिया। लोग एकदम घबराकर इधर-उधर भागने लगे और देखते ही देखते सारा बाग लाशों से भर गया। निर्दयी अंग्रेज भारी बूटों से लाशों को रौंदते हुए गोली चलाए जा रहे थे। लोग इधर-उधर भागते तथा एक बिना मुंडेर वाले चौड़े कुएं में जा गिरते। कुआं लाशों से भर गया। बाग की दीवारों पर गोलियों के निशान ही निशान नज़र आ रहे थे। बाग में फौजियों के बिना कोई भी आदमी चलता-फिरता नज़र नहीं आ रहा था। अगर कोई आदमी थोड़ी बहुत गर्दन उठाकर पानी मांगता तो फौजी उसको बंदूक के बट्ट से पीटते। लगभग सवा घंटा यह मृत्यु का तांडव चलता रहा। वैसाखी के पर्व पर पंजाब के शहर श्री अमृतसर में जनरल डायर के हुक्म से १३०० से ज्यादा पंजाबी बच्चे, बूढ़े तथा जवान गोलियों से भून दिए गए, जिसमें ७९९ सिक्ख थे। इनमें से एक सात सप्ताह का बच्चा भी था। एक अंदाज़े के अनुसार फौज ने १६५० कारतूस चलाए। शहर में मार्शल लॉ लगा दिया गया।

१४ अप्रैल के दिन ऊंची आवाज़ में शहर में ढिंढोरा पीटा गया कि "जनरल डायर साहिब का हुक्म है कि जिन लोगों के सगे-सम्बंधी जलियां वाला बाग में मारे गए हैं, वे उनका अंतिम संस्कार करने जा सकते हैं, परंतु वे किसी प्रकार का रोना-धोना नहीं कर सकते और न ही शोर मचा सकते हैं तथा न ही कोई सरकार के विरुद्ध आवाज़ उठाने की कोशिश करे। अगर कोई ऐसा करेगा तो उसे गोली मार दी जाएगी। जो ज़ख्मी हैं वे इलाज करवा सकते हैं परंतु कोई भी डॉक्टर मुकद्दमे के लिए सर्टीफिकेट नहीं दे सकता। जो डॉक्टर ऐसा करेगा उसको गिरफ्तार कर लिया जाएगा। सरकार का यह एलान है कि मरने वाले खुद मरे हैं। उनको जलसा सुनने नहीं जाना चाहिए था।"

कूचा कौड़ियां वाला श्री अमृतसर में एक तंग तथा १५० गज़ लम्बी गली है। इसके दोनों तरफ कई मंज़िला मकान हैं और तंग अंधेरी गलियां हैं। अगर इस गली के निवासियों ने कुछ खरीदना हो या शहर जाना हो तो इस गली में से गुज़रकर ही जाना पड़ता है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई रास्ता नहीं। घटना के दस दिन बाद डायर ने हुक्म जारी किया कि इस गली से गुज़रने वाला हर हिंदोस्तानी घुटनों व कुहनियों के बल रींगकर जाएगा। गली में जगह-जगह फौजी पिकटें लगा दी गईं। यह हुक्म डॉक्टर एवं सफाई करने वालों पर भी लागू था। १५ दिन तक श्री अमृतसर शहर नरक बना रहा। लोगों को पेट के बल चलाया गया। लोगों को परेशान करने के लिए पानी के नल बंद कर दिए गए। कुओं में गंदगी डाल दी गई ताकि अत्याचार के विरुद्ध कोई आवाज़ न उठाए। लगभग दो महीने श्री अमृतसर, लायलपुर, गुजरांवाला, कसूर तथा लाहौर आदि सिक्खों का गढ़ माने जाते शहरों के लोगों की आवाज़ को दबाने के लिए लगभग १२०० आदमी शहीद किए गए तथा ३६०० के लगभग जख़्मी। इनमें से कई तो सदा के लिए अपाहिज हो गए।

श्री अमृतसर की एक औरत माता रत्ना देवी, जो जलियां वाला बाग के पास ही रहती थी, का पति भी उस दिन जलसा देखने के लिए बाग में गया था। जब शाम तक उसका पति घर नहीं आया तो वह दो औरतों को साथ लेकर बाग में गई और वहां का दृश्य देखकर दंग रह गई। लाशों के ढेर में से उसने अपने पति की लाश तलाश की, जिसके लिए उसको रक्त-रंजित रास्ता तय करना पड़ा। कुछ देर बाद लाला सुंदर दास के दो पुत्र भी वहीं आ गए। माता रत्ना देवी ने उन औरतों तथा सुंदर दास के पुत्रों को अपने पति की लाश ले जाने के लिए चारपाई लाने को कहा। उस समय आठ बज चुके थे तथा आठ बजे

के बाद कर्फ्यू लग चुका था। साढ़े आठ बजे एक सिक्ख लड़का वहां आया जो शायद स. ऊधम सिंघ था। वह भी लाशों में से कुछ आदमियों की पहचान कर रहा था। उसने मदद कर माता के पति को सूखी जगह पर पहुंचाया। माता ने दस बजे तक चारपाई आने का इंतज़ार किया परंतु कोई न आया। वह माता कोशिश करती रही कि किसी तरह उसके पति की लाश उसके घर पहुंच जाए, परंतु कुछ न बना और उसने पूरी रात लाशों के ढेर में अपने पति की लाश के पास बैठकर गुजारी और एक डंडे से कुत्तों को लाशों को मुंह मारने से रोकती रही। उसने देखा कि तीन आदमी दर्द से कराह रहे थे। एक भैंस भी दर्द से तड़प रही थी। लगभग बारह वर्ष का एक लड़का दर्द से व्याकुल हो रहा था और माता को कह रहा था कि उसको अकेले को छोड़कर न जाओ और वह बार-बार पानी मांग रहा था परंतु पानी का एक घूंट भी आस-पास नहीं था। रात के दो बजे सुलतानविंड का एक किसान, जो दीवार के पास ज़ख्मी हुआ पड़ा था, उसने माता को अपनी फंसी हुई टांग निकालने को कहा। माता ने उसकी टांग निकाल दी और उसको आराम से लिटा दिया। सुबह के छः बजे लाला सुंदर दास तथा उसके पुत्र गली के कुछ अन्य आदमियों को लाए और माता के पति की लाश घर लेकर गए। वो सारी रात माता ने कैसे बिताई होगी, इसके बारे में वह शब्दों में बयान करने से असमर्थ थी।

जनरल डायर ने जो पाप किया था, शायद धरती भी उसके भार को झेलने के लिए तैयार नहीं थी। उसको १९२१ ई में पक्षाघात का दौरा पड़ा जिससे वह काफी कमज़ोर हो गया और १९२६ ई में वह अपने पुराने घर बरिस्टल के पास लांस आशटन में सेंट मार्टन में आ गया तथा मृत्यु से बद्तर ज़िंदगी जीता रहा। ११ जुलाई, १९२७ ई को उसको फिर दौरा पड़ा और २३ जुलाई, १९२७ ई को उसकी मृत्यु हो गयी।

भारत से ६००० मील दूर थेमस दरिया के किनारे दोनों तरफ बसे संसार के सबसे बड़े शहर लंदन में १६ मार्च, १९४० ई को इंडिया हाऊस में जलसा हो रहा था। जर्मनी के विरुद्ध तकरीरें हो रही थीं क्योंकि हिटलर ने लंदन पर हमला करके बमबारी की थी, इसलिए सर माइकल ओडवायर भी अपने विचार पेश करने आया। जब वह स्टेज़ पर आकर बोलने लगा तो पंजाब की धरती के वीर सपूत स. ऊधम सिंघ ने तीन गोलियां उसकी छाती में दाग दीं और उसने २१ वर्ष के बाद बेकसूर पंजाबियों के खून तथा अपमान का बदला लेकर उनकी आत्मा को शांति दी। मज़दूरों के अख़बार 'डेली वर्कर्ज़' ने स. ऊधम सिंघ की तसवीर अपने अख़बार में छापी और लिखा कि निर्भय इंकलाबी हिंदोस्तानियों ने जलियां वाला बाग के शहीदों के खून का बदला २१ वर्ष बाद लिया। मुलज़िम ने किसी किस्म का बयान देने से इंकार कर दिया। वह अदालत में पूरा बयान देगा। पुलिस और जांच-पड़ताल कर रही है।

जब सन् १९१९ ई में जलियां वाला बाग का खूनी साका घटित हुआ था, उस समय स. ऊधम सिंघ स्कूल में पढ़ता था। उसने खूनी साके का सारा दृश्य अपनी आंखों से देखा था और उसने उस समय ही इसका बदला लेने की सौगंध खाई थी। २१ वर्ष तक वह बदला लेने का मुनासिब मौका ढूंढता रहा। इस अरसे के दौरान ही जनरल डायर १९२७ ई को मौत के मुंह में जा चुका था, किंतु इस घटना का खलनायक सर माइकल ओडवायर अभी ज़िंदा था। स. ऊधम सिंघ उससे बदला लेने के मकसद से सन् १९३३ ई में लंदन पहुंच गया था। सन् १९४० ई में स. ऊधम सिंघ उर्फ राम रहीम सिंघ को सर माइकल ओडवायर के कत्ल के दोष में फांसी की सज़ा देकर शहीद कर दिया गया।



मन मेरे नामि रहउ लिव लाई

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

परमात्मा एक है। उसके एकत्व को एकाग्रता और केंद्रित मन से ही समझा जा सकता है। मन चंचल है, इधर-उधर भटक रहा है, ध्यान अलग-अलग बिंदुओं पर जा रहा है तो परमात्मा को समझा और पाया नहीं जा सकता। उसके रंग में रंग जाना, सदा उसका संग करना ही परमात्मा को मानना है :

ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा ॥
तुम्हरो धिआनु तुम्हारो रंगा ॥
तुम्हरी सेवा तुम्हारे अंगा ॥ (पन्ना ८२८)

गुरसिक्ख हर समय हरि के विद्यमान होने का भाव दृढ़ रखता है और उसके प्रेम में रमा रहता है। गुरसिक्ख इस भावना के तहत सदैव वही कार्य-व्यवहार करता है जो परमात्मा को प्रिय है। परमात्मा-प्रेम उसे परमात्मा की इच्छा के विपरीत नहीं जाने देता। प्रेम उसके आचार-विचार को शुद्ध बनाये रखता है इसीलिए तो वह खालसा है। गुरसिक्ख परमात्मा का ही साथ चाहता है। परमात्मा ही उसका आधार है और वह उस पर ही विश्वास करता है। परमात्मा पर अटूट विश्वास होना और इस विश्वास का दुविधा-शंका रहित होना गुरसिक्खी की पहली सीढ़ी है। इस सीढ़ी पर चढ़ना अति कठिन है। संसार की रीति अलग तरह की है, जहां कुछ भी स्पष्ट नहीं है और लोग अपने जीवन को व्यर्थ गंवा रहे हैं :

दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुंदरु कहावै ॥
चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा आवै ॥
सतरि का मतिहीणु असीहां का विउहारु न पावै ॥
नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥
ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूए का धवलहरु ॥ (पन्ना १३८)

उपरोक्त गुरु-वचन को समझने के पूर्व निम्नलिखित वचनों पर विचार आवश्यक है। पहला वचन परमात्मा की लीला से सम्बंधित है :

तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती ॥
इकि आवहि इकि जाहि उठि बिनु नावै मरि जाती ॥ (पन्ना १३८)

इस संसार में कोई जन्म ले रहा है, कोई मृत्यु को प्राप्त हो रहा है। आवागमन का चक्र चलता जा रहा है। संसार में जो कुछ हो रहा है उसे समझ पाना कठिन है। इसे बस, परमात्मा ही समझ सकता है जिसने इस संसार की रचना की है। कुछ अन्य न समझ सकने के बाद भी एक बात निश्चित रूप से समझ में आने वाली है कि जिसने अपने मन में परमात्मा का नाम नहीं बसाया वह मृतक के समान है। आयु के अनुसार दस वर्ष का बच्चा, बीस वर्ष का युवक, तीस वर्ष का परिपक्व, चालीस वर्ष का उत्तरदायी कहा जाए, पचास वर्ष वाले को उम्र की ढलान पर जाने वाला, साठ वर्षीय को वृद्ध, सत्तर वर्षीय को मतिहीन, अस्सी वर्षीय को शारीरिक बलहीन और नब्बे वर्षीय को मरण-शैय्या पर लेटा मान लिया जाए। ये सारी धारणाएं धुएं के धवलहर अर्थात्

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३

मिथ्या अवधारणाएं हैं। यदि मन में परमात्मा नहीं तो तीस वर्षीय को कैसे सुंदर कहा जा सकता है? गुरु-विचार के अनुसार तो वह मृतक के समान है।

दूसरा आगे का वचन परमात्मा की महानता और उस महानता से जुड़ने वाले जीव की महानता से सम्बंधित है :

तूं आपे आपि सुजाणु है वड पुरखु वडाती ॥
जो मनि चिति तुधु धिआइदे मेरे सचिआ बलि बलि हउ तिन जाती ॥ (पन्ना १३८)

परमात्मा ज्ञान का स्रोत है, सृष्टि का नियामक है, सर्वोपरि शक्ति है। ऐसे महान परमात्मा का भाव मन में धारण करने वाले स्वयं इतने ऊंचे हो जाते हैं कि उन पर बार-बार बलिहार जाने को मन करता है। मन में परमात्मा का नाम है तो अस्सी वर्षीय की आभा (आध्यात्मिक पक्ष से) बीस वर्ष के युवक जैसी सुंदर हो जाती है और मन में परमात्मा न होने पर तीस वर्षीय युवक की दशा मृत्यु-शैय्या पर पड़े व्यक्ति के समान है। आयु का परमात्मा-स्मरण से कोई सम्बंध नहीं है। गुरु-विचार ने पुरातन स्थापनाओं को ध्वस्त करते हुए समझ दी है कि वही बलशाली, सुंदर और सजीव है जिसने अपना मन परमात्मा पर टिका दिया है। कदाचित इसीलिए गुरु नानक साहिब ने बालक 'बूड़ा' को 'बुड्ढा' (बाबा बुड्ढा जी) बना दिया और श्री गुरु अंगद देव जी ने बहत्तर वर्ष से अधिक आयु के बाबा अमरदास जी को गुरगद्दी सौंपकर श्री गुरु अमरदास जी बना दिया। परमात्मा पर मन पूरी तरह टिक गया और बाबा बुड्ढा जी एवं श्री गुरु अमरदास जी पूजनीय बन गये। एक सतिगुरु का सच्चा सिक्ख और दूसरा परमात्मास्वरूप गुरु।

मन टिकता नहीं है। माया का जाल ऐसा पसरा हुआ है कि बचना कठिन है। मन को विकारों ने घेरा हुआ है। किसी न किसी विकार के प्रभाव में भटकता हुआ मन परमात्मा के निकट आ ही नहीं पाता। दुविधा में फंसा मन कभी अपनी बुद्धि, शक्ति पर, कभी किसी अन्य चतुराई और कौशल पर भरोसा करने लगता है। वह जान नहीं पाता कि सच क्या है और मिथ्या क्या है। मिथ्या को सच मानकर अपने जीवन के सुअवसर को गंवा देना ही सबसे बड़ी अज्ञानता है। मन को परमात्मा का ज्ञान सतिगुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है :

अगम अगाधि सुनहु जन कथा ॥
पारब्रहम की अचरज सभा ॥१॥रहाउ॥
सदा सदा सतिगुर नमसकार ॥
गुर किरपा ते गुन गाइ अपार ॥
मन भीतरि होवै परगासु ॥
गिआन अंजनु अगिआन बिनासु ॥ (पन्ना १२३५)

मन एकाग्र तब होगा जब उसमें ज्ञान का प्रकाश व्याप्त हो जायेगा। सतिगुरु की कृपा से ज्ञान होता है कि परमात्मा अथाह शक्तियों का स्वामी है और उसकी महिमा अपार है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसकी महानता का आभास-मात्र ही मन की सारी दुविधाएं दूर करके परमात्मा से जोड़ देता है। परमात्मा से प्रीति ऐसी बन जाती है कि हर सांस के साथ मन उसका गुण-गायन करने लग जाता है :

गुर मिलि ऐसे प्रभू धिआइआ ॥
भइओ क्रिपालु दइआलु दुख भंजनु लगै न ताती बाइआ ॥१॥रहाउ॥
जेते सास सास हम लेते तेते ही गुण गाइआ ॥
निमख न बिछुरै घरी न बिसरै सद संगे जत जाइआ ॥१॥
हउ बलि बलि बलि बलि चरन कमल कउ बलि बलि गुर दरसाइआ ॥

कहु नानक काहू परवाहा जउ सुख सागरु मै पाइआ ॥ (पन्ना १२१२)

परमात्मा पर विश्वास करने वाला गुरसिक्ख ही कह सकता है कि उसने तो सुखों का सागर पा लिया है। अब उसे किस बात की परवाह! उसे किसी अन्य सांसारिक आधार, शक्ति, युक्ति, विधि की आवश्यकता नहीं रहती जो मन के भटकाव और दुविधा का कारण हैं। मनुष्य यहां-कहां खोजता रहता है सुख को! सुख की खोज में यत्र-तत्र भटकना अज्ञान है। सतिगुरु की कृपा से ही उसे ज्ञान प्राप्त होता है कि सुख तो परमात्मा के चरणों में है, इसीलिए वह सुखों के सच्चे दाता को कभी भी विस्मृत नहीं करता है और हर स्थान पर उसे ही अपना प्रतिपालक, सहायक, तारणहार और पालनकर्ता मानता है।

मन अज्ञानता के कारण भटकता रहता है। यदि उसे अपना उद्गम-स्थल पता चल जाए तो सारे दुख समाप्त हो जायेंगे। परमात्मा को पाने में मनुष्य के मन की भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है इसे पहली बार सिक्ख गुरु साहिबान ने ही पहचाना और मन को स्थिर व केंद्रित करने पर ज़ोर दिया ताकि परमात्मा और मनुष्य के बीच की दूरी और बाधाओं को दूर किया जा सके। उन्होंने कहा कि मन तो परमात्मा का ही अंश है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥
गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ॥
मनि सांति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥
इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ॥ (पन्ना ४४१)

गुरु-विचार है कि मनुष्य अपने अंतर को पहचान ले तो सारी समस्या दूर हो जाए। आत्मा तो परमात्मा का ही अंश है और अंतर में परमात्मा का वास भी है। जो परमात्मा का अंश है वह परमात्मा की ही भांति जीवन और मरण से मुक्त है। जन्म और मृत्यु सबसे बड़े दुख हैं मनुष्य के। अंतर के उद्गम को पहचान लेने के बाद ये दुख दूर हो जाते हैं और मन की सारी चिंताएं शांत हो जाती हैं। जब तक मनुष्य अपने मूल को नहीं पहचानता तब तक वह परमात्मा से अपने सम्बंध को भी नहीं जान सकता। जब तक अपनी पहचान सुहागिन के रूप में न हो तब तक कंत से सम्बंध की दृष्टि कैसे धारण की जा सकती है? अंतर की पहचान न होना मन को विकारों से भर देता है और मनुष्य आवागवन के फेर में फंसा रहता है। विकारों, माया-मोह से सतिगुरु ही मुक्ति दिला सकते हैं :

हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइ ॥
जो मोहि दूजै चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ ॥
गुर कै सबदि परजालीऐ ता एह विचहु जाइ ॥
तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥
नानक माइआ का मारणु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (पन्ना ५१३)

परमात्मा की ओर न चलने वालों का जीवन माया-मोह और विकारों के चलते नष्ट हो जाता है। विकार उन्हें मज़बूती से पकड़े रहते हैं। गुरु का शबद ही विकारों को दूर कर सकता है। परमात्मा के नाम को जपने से तन और मन दोनों पवित्र हो जाते हैं और अंतर में सुखदायक परमात्मा बस जाता है। श्री गुरु नानक देव जी के पूर्व तक परमात्मा को पाने के लिए न जाने कैसे-कैसे यत्न किये जा रहे

थे। कितने ही पाखंड, कर्मकांड धर्म का इस तरह हिस्सा बन गए थे कि आध्यात्म का स्वरूप ही बदल गया था। परमात्मा के कितने ही दावेदार बन गये थे और कितने ही दावेदार परमात्मा से मिलाने के लिए खड़े हो गए थे। एक घना कुहासा था जिसने लोगों की मति को भ्रमित कर दिया था। सिक्ख गुरु साहिबान ने अज्ञानता के कुहासे को दूर करते हुए कहा कि मन ही माध्यम है परमात्मा से मिलने का और मिलने की युक्ति भी मन के ही पास है :

मन की परतीति मन ते पाई ॥
पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥
जीवण मरणु को समसरि वेखै ॥
बहुड़ि न मरै ना जमु पेखै ॥२॥
घर ही महि सभि कोट निधान ॥
सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥
सद ही लागा सहजि धिआन ॥
अनदिनु गावै एको नाम ॥३॥ *(पन्ना ७९८)*

संसार की सारी रिद्धियों-सिद्धियों का दाता परमात्मा मन में ही है जिसे मन की मति से पाया जा सकता है। हर दिन उसका नाम जपने से वह सहज ही प्राप्त हो जाता है और मृत्यु का त्रास मिट जाता है। जीवन में सहज दृष्टि आ जाती है। ऐसा गुरु-शबद से ही हो सकता है। मन की प्रतीति के लिए गुरबाणी का अनदिन गायन ही एक मार्ग है। इस मार्ग पर चलने की बुद्धि सतिगुरु से ही प्राप्त होती है :

गुरि मिलिऐ सभ मति बुधि होइ ॥
मनि निरमल वसै सचु सोइ ॥
साचि वसिऐ साची सभ कार ॥
ऊतम करणी सबद बीचार ॥३॥
गुर ते साची सेवा होइ ॥
गुरमुखि नामु पछाणै कोइ ॥ *(पन्ना १५७)*

संसार में सर्वश्रेष्ठ कार्य है परमात्मा के गुणों का गायन और मनन। सतिगुरु से मिलकर मन निर्मल हो जाता है, शंकाएं दूर हो जाती हैं और सच की पहचान हो जाती है। व्यवहार श्रेष्ठ हो जाता है। सतिगुरु की शरण में जाने से परमात्मा की सेवा की प्रेरणा मिलती है अर्थात् जीवन का मनोरथ परमात्मा के मनोरथ के अनुकूल हो जाता है।

गुरु-शबद मन में विकारों की जमी हुई मैल को धोने का कार्य करता है। जितना गुरसिक्ख शबद से जुड़ता जाता है उतनी उसके मन की मैल उतरती जाती है और मन निर्मल होता जाता है :

निरमल ते सभ निरमल होवै ॥
निरमलु मनूआ हरि सबदि परोवै ॥
निरमल नामि लगे बडभागी निरमलु नामि सुहावणिआ ॥५॥
सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥
निरमल नामि मनु तनु मोहै ॥
सचि नामि मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥६॥ *(पन्ना १२१)*

गुरु साहिब ने अनूठा तथ्य सामने रखा कि जो शबद से जुड़ा हुआ है वह निर्मल है। गुरसिक्ख की शान उसका नित्तनेम है। जितना वह नित्तनेम पर दृढ़ है, गुरबाणी से जुड़ा हुआ है, उतना ही सच्चा सिक्ख है। गुरु-शबद, परमात्मा का नाम है ही इतना निर्मल कि वह उसे सदैव अपनी ओर खींचता है। गुरु-शबद से निर्मल हो गया मन परमात्मा के नाम को माला के मनकों की तरह अपनी सांसों में पिरोता जाता है। जितने भी लोग निर्मल गुरु-शबद से जुड़ते हैं सब निर्मल होते जाते हैं। गुरु-शबद से जुड़ने वाले को माया-विकार कभी भी अपने वश से नहीं कर पाते और वह सदैव सच के मार्ग पर चलता रहता है। परमात्मा उसकी सदा

सहायता करता है :

बंधन काटै सो प्रभू जा कै कल हाथ ॥
अवर करम नही छूटीऐ राखहु हरि नाथ ॥१॥
तउ सरणागति माधवे पूरन दइआल ॥
छूटि जाइ संसार ते राखै गोपाल ॥
(पन्ना ८१५)

सभी कष्टों, विघ्न-बाधाओं से बचाने वाला परमात्मा ही है। वह अत्यंत दयालु है और उसकी शरण में जाने से रक्षा हो सकती है। शेष सारे कर्म व्यर्थ हैं। माया और विकारों के बंधन, जिनसे दुख और संताप मिल रहा है, बस, परमात्मा ही काट सकता है, क्योंकि ऐसी सामर्थ्य उसके पास ही है। *"राखहु हरि नाथ"* और *"राखै गोपाल"* में पहली विनती है और दूसरा विश्वास। विनती उसी से की जाती है जिस पर विश्वास होता है। विश्वास न हो तो विनती का कोई प्रभाव नहीं होता। सम्पूर्ण विश्वास हो तो विनती भी पूर्ण होती है। भूख (तृष्णा) तो तभी दूर होगी जब सच्चे नाम का आधार मन में बना लिया हो। मन में सच्चे नाम का आधार होने से सुख और शांति प्राप्त होती है और समस्त इच्छाएं पूर्ण होती हैं। वे मन भाग्यशाली हैं जिनमें परमात्मा के नाम का वास है :

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥
धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥ *(पन्ना ९१७)*

ऐसे गुरसिक्ख भाग्यशाली हैं जिनके मन में गुरु-शबद सुशोभित है। सारे विकार उनके वश में हो जाते हैं और वे परमात्मा के अनहद नाद से सदैव आनंदित रहते हैं। उनके मन से सांसारिक सुखों की कामना जाती रहती है :

सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सीतल तनु मनु छाती ॥
रूप रंग सूख धनु जीअ का पारब्रहम मोरै जाती ॥१॥
रसना राम रसाइनि माती ॥
रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निधि थाती ॥रहाउ॥
जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती ॥
मेलि लीओ आपे सुखदातै नानक हरि राखी पाती ॥२॥ *(पन्ना ६८१)*

परमात्मा के नाम का सिमरन अपार शीतलता प्रदान करने वाला है। सिमरन करने वाले को जीवन की ऐसी पूंजी प्राप्त होती है जिसका कभी क्षय नहीं हो सकता और वह पारब्रह्म से एकाकार हो जाता है। वह नाम के रस में मत्त हो जाता है और नाम उसे बड़ी निधि की तरह लगने लगता है। एक ईश्वरवाद है ही एक में लिव, ध्यान लगाना; एक ईश्वर के बिना किसी और को न जानना :

जीउ पिंडु प्राण सभि तिस के घटि घटि रहिआ समाई ॥
एकसु बिनु मै अवरु न जाणा सतिगुरि दीआ बुझाई ॥१॥
मन मेरे नामि रहउ लिव लाई ॥
अदिसटु अगोचरु अपरंपरु करता गुर कै सबदि हरि धिआई ॥१॥रहाउ॥
मनु तनु भीजै एक लिव लागै सहजे रहे समाई ॥
गुर परसादी भ्रमु भउ भागै एक नामि लिव लाई ॥२॥ *(पन्ना १२६०)*

गुरु के शबद से प्रेरित होकर केवल हरि का ही ध्यान धरें!



सिक्ख पंथ के उत्थान पर एक विहंगम दृष्टि

*-स. जसविंदर सिंघ खांबरा**

भारतीय इतिहास के मध्य युग में पंजाब में १४६९ ई में महामानव श्री गुरु नानक देव जी का आगमन हो चुका था। चिंतनशील व मनीषी श्री गुरु नानक देव जी ने चारों ओर के समाज एवं उसकी पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया। श्री गुरु नानक देव जी का मानवता व राष्ट्र के प्रति प्रेम से भरा दिल देश व समाज की कारुणिक दशा पर द्रवित हो उठता था। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने भरसक यत्नों से सामाजिक क्रांति व आज़ादी का अभियान चलाया।

श्री गुरु नानक देव जी ने जाना कि जातीय भेदभाव से उत्पन्न सामाजिक विघटन ही देश एवं समाज के पतन तथा गुलामी का कारण है। उन्होंने एकता, समता एवं मानवीय प्रेम की जीवन-व्यवस्था का प्रचार प्रारंभ किया। यह अजीब विडंबना थी कि प्राचीन वर्ण-व्यवस्था के अनुसार देश का समस्त कामगर वर्ग 'शूद्र' कहा जाता था। ऐसे में आपस में घृणामय व्यवहार करने का सामाजिक वातावरण कायम हो गया था।

इस वातावरण के कारण मानव-मूल्यों के ह्रास से समाज का घोर पतन हुआ। समाज की पीड़ा के प्रति संवेदनशील श्री गुरु नानक देव जी ने इस भयंकर विकृति को मिटा देने का संकल्प किया। उन्होंने कहा :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥ (पन्ना १५)

श्री गुरु नानक देव जी ने तथाकथित नीच, निकृष्ट व शूद्र लोगों को अपना सहयोगी व मित्र बना लिया। अपनी देश-विदेश की धर्म प्रचार-यात्राओं में उन्होंने तथाकथित नीच जाति के लोगों के घर का आतिथ्य स्वीकार किया। उन्होंने जाति अभिमानी लोगों का बहिष्कार कर वर्गविहीन आदर्श समाज की स्थापना की।

श्री गुरु नानक देव जी के उत्तराधिकारी श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी के पद-चिन्हों पर चलते हुए बच्चों को शिक्षा देने का प्रबंध किया; नौजवानों को अच्छी सेहत देने के लिए अखाड़ों का प्रबंध किया।

तृतीय गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने अपने पास आने वाले हर दर्शनाभिलाषी श्रद्धालुओं के लिए एक ही पंगत (पंक्ति) में बैठकर लंगर छकने की परंपरा आरंभ की। एक साथ मिल-जुलकर ईश्वर-भक्ति करने को 'संगत' व एक साथ मिलकर लंगर छकने को 'पंगत' का उच्च महत्त्व दिया गया। समतावादी समाज-निर्माण के कार्यक्रम के अंतर्गत श्री गुरु अमरदास जी ने सैकड़ों अंतर्जातीय विवाह संपन्न करवाए।

चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने 'अमृत सरोवर' एवं 'अमृतसर' नगर की आलौकिक स्थापना की। उन्होंने ५२ प्रकार के व्यवसाय से संबंधित कामगारों को इस नगर में बसाकर व्यवसाय का विस्तार किया। इस प्रकार श्रमजीवी कारीगर वर्ग का उत्थान किया गया।

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

**प्रधान संपादक, सैन खोज पत्रिका, नकोदर रोड, खांबरा, जलंधर- १४४०२६; मो. ९४१७०९४२२३*

धरती का आंचल न हो तार-तार

-स. जोगिंदरपाल सिंघ*

भारत में अधिकतर लोग सदियों से प्रातः काल उठते ही सबसे पहले धरती को मां कह कर प्रणाम करते हैं। इस धरती मां का आंचल आज तार-तार हो रहा है। वन उजड़ रहे हैं, परिस्थितिकीय संतुलन बिगड़ रहा है और तापमान बढ़ रहा है। ऐसे में यह धरती मां अपने आंचल की शीतल छांव में हमें कैसे सुरक्षित रख पाएगी? २२ अप्रैल को पूरी दुनिया धरती दिवस मनाती है। मौका है इसी अवसर पर इस धरती मां के आंचल को सुरक्षित रखने हेतु प्रण लेने का।

क्यों मनाया जाता है धरती दिवस ? जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि धरती दिवस (अर्थ डे) का मकसद पर्यावरण को प्रदूषण-मुक्त करना है, जिसमें हवा, पानी, ज़मीन और जंगल शामिल हैं। इससे भी अधिक इसका उद्देश्य है कि देश के राजनीतिक परिदृश्य में पर्यावरण जागरूकता के मुद्दे को शामिल कराने के लिए प्रयास करना।

ग्लोबल वार्मिंग : धरती पर मानवीय गतिविधियों एवं पर्यावरण में ग्रीन हाऊस गैसों (कार्बनडाईऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड एवं जलवाष्प) की बढ़ती सघनता की वजह से पृथ्वी की सतह के औसत तापमान में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। सदी के अंत तक इस तापमान में १.६ से ६ डिग्री तक बढ़ोतरी अनुमानित है।

जल हो जायेगा लुप्त : दुनिया में १.१ अरब लोगों की साफ पेयजल तक पहुंच नहीं है।

२०२५ तक ३.५ अरब लोगों के लिए पानी खत्म हो चुका होगा।

२०२० तक दुनिया के भोजन के लिए मौजूदा पानी से १७ प्रतिशत अधिक चाहिएगा।

दुनिया के हर पांच में से एक आदमी को साफ पेयजल उपलब्ध नहीं है।

विकासशील देशों में जल-स्रोतों के विकास पर प्रत्येक वर्ष लगभग ६० अरब डॉलर का खर्च आता है।

घट रहे हैं वन : वर्ष २००० से २००५ के बीच प्रतिवर्ष १ करोड़, ३० लाख हैक्टेयर वन समाप्त हुए हैं।

धरती पर फुटबॉल के ७१ हज़ार मैदानों के बराबर वन प्रतिदिन समाप्त हो रहे हैं।

प्रतिदिन लगभग ४० लाख पेड़ काट दिए जाते हैं।

विश्व में लगभग १ करोड़, ३० लाख लोगों को वनों से रोज़गार प्राप्त है।

भारत में ग्रामीण क्षेत्रों के २७.५ करोड़ ग्रामीणों का जीवन पूर्णतः वनों पर आश्रित है।

तापमान 5 डिग्री सेटीग्रेड बढ़ा तो :

हिमालय के बड़े ग्लेशियर लुप्त हो जाएंगे। चीन की लगभग २५ प्रतिशत एवं भारत की बड़ी आबादी प्रभावित होगी।

समुद्रीय अमलता में लगातार बढ़ोतरी सामुद्रिक पारिस्थितिकीय तंत्र के लिए विनाशकारी।

समुद्र तल में बढ़ोतरी से छोटे द्वीपों तथा न्यूयार्क और लंदन जैसे शहरों में बाढ़ का खतरा।

तापमान में और बढ़ोतरी होने पर क्या उजड़

***C/o** *मैसर्स पाल ब्रदर्स, २४८, राजा पार्क, जयपुर-३०२००४**

जाएगी दुनिया ?

दक्षिण यूरोप में प्रति दस वर्ष बाद भयानक सूखा।

१ से ४ अरब लोगों को पानी की कमी।

१५ से ५५ करोड़ अतिरिक्त लोग भुखमरी का शिकार।

१० से ३० लाख लोग कुपोषण का शिकार।

अफ्रीका में ४ से ६ करोड़ तक लोग मलेरिया का शिकार।

आर्कटिक पर ध्रुवीय भालू जैसी प्रजातियां हो जाएंगी विलुप्त।

एक करोड़ अतिरिक्त लोग होंगे बाढ़ का शिकार।

चिंता भारत के लिए भी : देश में केवल घरेलू प्रदूषण से साल भर में लगभग पांच लाख लोगों की मौत होती है।

दक्षिण-पूर्व एशिया में छ: लाख मौतों में से ८० फीसदी भारत में।

भारत में घरेलू प्रदूषण का शिकार होने वालों में से ७० प्रतिशत गांवों से।

पिछले दो दशक में देश की जीडीपी में ढाई गुना बढ़ोतरी, जबकि वाहनों की संख्या में आठ गुना इजाफा।



सिक्ख पंथ के उत्थान पर एक विहंगम दृष्टि

(पृष्ठ ४४ का शेष)

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री अमृतसर नगर में सारे धर्माभिलाषियों के लिए श्री हरिमंदर साहिब धार्मिक केंद्रीय स्थान निर्मित करवाया। इसके अलावा तरनतारन एवं करतारपुर (ज़िला जलंधर) नगरों की भी स्थापना की। देश की परंपरागत वर्ण-व्यवस्था ने अभी तक तथाकथित शूद्र जाति में जन्मे संतों-भक्तों को भी योग्य सम्मान नहीं दिया था। एकता व समता के प्रचारक श्री गुरु अरजन देव जी ने बिना किसी भेदभाव के सारे संतों-भक्तों की पावन बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल कर भ्रातृ-भाव की नई मिसाल कायम की।

छठम गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने नौजवानों को सैनिक-प्रशिक्षण देकर उन्हें शस्त्र-संचालन-कला में पारंगत किया। सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब एवं आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने भी क्रांतिकारी सिक्ख समाज को हर प्रकार से अग्रसारित किया। नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने वर्ग-विहीन सामाजिक संरचना एवं विकास के ध्येय को बल देने के लिए अपना अद्वितीय बलिदान दिया।

इच्छा-शक्ति के अपार धनी दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने पूर्ववर्ती नौ गुरु साहिबान की अमूल्य धरोहर के आधार पर नए निराले क्रांतिकारी आयोजन किए। सिक्खों के लिए सैनिक प्रशिक्षण-केंद्रों के साथ-साथ सुरक्षात्मक किलों का निर्माण अत्यंत सुनियोजित ढंग से किया। सन् १६९९ की वैसाखी के दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने उद्देश्य को क्रियान्वित रूप देने के लिए खालसा पंथ की स्थापना की। 'पांच प्यारों' को अमृत छकाया। फिर उनसे खुद अमृत छककर गुरु एवं शिष्य का भेद मिटा दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के द्वारा सुसज्जित बाबा बंदा सिंघ बहादर के नेतृत्व में खालसा पंथ ने खालसा राज्य का झंडा भारत के उत्तरी भू-भाग में फहरा दिया। उसके बाद स. बघेल सिंघ, सुलतान-उल-कौम सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया आदि शूरवीर सिक्ख योद्धाओं के त्याग, उत्सर्ग एवं देश-भक्ति की गाथाएं चंद्रमा व सूर्य से भी अधिक ऊर्जा एवं प्रकाश से भरे सिक्ख इतिहास के पन्नों पर अंकित हैं।



गुरबाणी चिंतनधारा : ७९

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥
लादि खेप संतह संगि चालु ॥
अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥
धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥
मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥
इहु वापारु विरला वापारै ॥
नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥ (पन्ना २८३)

पंद्रहवीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने मनुष्य को उसके जीवन का असल मनोरथ स्मरण करवाया है। केवल स्मरण ही नहीं करवाया अपितु उस मनोरथ को सफल करने का सही मार्ग भी सुझाया है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे जीव! तू जिस सौदे को खरीदने हेतु इस जगत में आया है, वह राम (प्रभु)-नाम रूपी सौदा संत-जनों के घर अर्थात् संतों की संगत में मिलता है। तू अभिमान को त्यागकर मन के बदले यह सौदा खरीद ले तथा राम-नाम रूपी सौदे को हृदय रूपी कसौटी पर परख ले। संतों की संगत में अपनी मनमर्जी को त्यागकर राम-नाम रूपी (अनमोल) पदार्थ खरीद ले और माया के समस्त धंधों को त्याग दे अर्थात् जंजालों को छोड़ दे। इस तरह का सौदा करने पर प्रत्येक व्यक्ति तेरी सराहना करेगा अर्थात् तेरी वाह-वाह हो जायेगी और दरगाह में भी तेरा मुख उज्जवल होगा। ऐसा (पवित्र) व्यापार कोई विरला ही करता है। पंचम पातशाह ऐसे व्यापारी से कुर्बान जाते हैं।

गुरबाणी आशयानुसार हर जीव व्यापारी है और इस जगत में लाभ का सौदा करने आया है, लेकिन कोई विरला ही इस मनोरथ को समझ सका है और इस तरह का व्यापार करने में सफल हो सका है। वस्तुत: इस दुनिया में आकर जीव ऐसे-ऐसे व्यापार करने में मगन हो जाता है जिसकी बदौलत अपने बेशकीमती श्वासों की पूंजी को बर्बाद कर लेता है और फिर यह पूंजी खत्म हो जाने पर इसके पास केवल पछतावा ही शेष रह जाता है। भक्त कबीर जी ने इस संदर्भ में बहुत ही सुंदर शबद उच्चारण किया है, जिसमें इस हकीकत को बयान किया है कि किसी ने तो संसार से आकर कांसा खरीदा, किसी ने तांबा और किसी ने लौंग सुपारी। संत-जनों ने प्रभु-नाम का व्यापार किया। प्रभु-नाम-रूपी हीरे के व्यापार की बदौलत सांसारिकता अर्थात् संसार के नश्वर पदार्थों का मोह छूट गया :

--किनही बनजिआ कांसी तांबा किनही लउग सुपारी ॥
संतहु बनजिआ नामु गोबिद का ऐसी खेप हमारी ॥१॥
हरि के नाम के बिआपारी ॥
हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि गई संसारी ॥
(पन्ना ११२३)

--वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥
(पन्ना २२)

पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी उपरोक्त शबद में यही समझा रहे हैं कि ऐसी वस्तुओं का व्यापार करो जो साथ निभाने वाली हों। वह बड़ा व्यापारी अर्थात् परमेश्वर बड़ा ज्ञानी (सूझवान) है। वह तुम्हारे सौदे की पूरी संभाल करेगा।

यहां दुनियावी उदाहरण से आध्यात्मिक अर्थ समझने का प्रयत्न करें। जैसे कोई भी पिता अपने पुत्र को किसी व्यापार हेतु पूंजी लगाकर देता है तो फिर कुछ समय बाद उससे हिसाब मांगता है, ठीक उसी प्रकार वह पिता (प्रभु), जिसने हम सबको श्वासों की पूंजी बख़्शी है, वह भी तो इसका हिसाब मांगेगा कि इस बेशकीमती श्वासों की पूंजी से कौन-सा व्यापार किया।

लाखों रुपये खर्च करके हम एक भी श्वास स्वेच्छा से नहीं ले सकते। केवल प्रभु-सिमरन और नेक कर्मों द्वारा ही इन्हें सफल बनाया जा सकता है। वाहिगुरु रहमत करें, हम भी अपने अमूल्य श्वासों को नेक कर्मों में खर्च करके सफल कर सकें।

चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥
अरपि साध कउ अपना जीउ ॥
साध की धूरि करहु इसनानु ॥
साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥
साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥
अनिक बिघन ते साधू राखै ॥
हरि गुन गाइ अंम्रित रसु चाखै ॥
ओट गही संतह दरि आइआ ॥
सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥

पंचम पातशाह ने छठी पउड़ी में साधु-जनों के महत्त्व को प्रतिपादित किया है तथा साथ ही साधु-जनों की संगत को विघ्नों का नाश करने वाला बताया है। यह संगत सौभाग्य से ही प्राप्त होती है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि साधु-जनों के चरण धो-धोकर पीने चाहिए अर्थात् मन की मति त्यागकर साधु-जनों के पावन उपदेशों पर अमल करना चाहिए। साधु-जनों पर अपने प्राण भी न्यौछावर कर देने चाहिए। गुरमुख-जनों (पूर्ण संत-जनों) के चरणों की धूलि में स्नान करना चाहिए अर्थात् मनसा-वाचा-कर्मणा (मन, वाणी और कर्म) से उनके वचनों की पालना करनी चाहिए और उनसे कुर्बान जाना चाहिए। साधु-जनों की सेवा बड़े भाग्य से नसीब होती है। संत-जनों की संगत में ही ईश्वर की आराधना हो सकती है अर्थात् संत-जनों की संगत में सहज स्वभाव ही प्रभु की कीर्ति होने लगती है। संत-जन जीवन मार्ग में आने वाले अनेक विघ्नों से बचा लेते हैं अर्थात् आत्मिक जीवन के मार्ग में आने वाली अड़चनों, काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार आदि विकारों से सुरक्षित रखते हैं। संत-जनों की संगत से ही जीव हरि का गुणगान करके नाम रूपी अमृत का रसास्वाद करता है अर्थात् संत-जन प्रभु की स्तुति करके आनंदमग्न रहते हैं, उनकी संगत में आने वाले भी सहज अवस्था में यह आनंद प्राप्त कर लेने में सक्षम हो जाते हैं। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन संदेश देते हैं कि जिस जीव ने संत-जनों का आश्रय लिया है अर्थात् जो संत-जनों की शरण में आ गया, उसने समस्त सुख प्राप्त कर लिए समझो।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु साहिब ने जीव को साधु-जनों की चरण-धूलि में स्नान करने को प्रेरित किया है। वस्तुतः उनकी संगत में प्रभु-नाम का अभ्यास करते हुए प्रभु-नाम को हृदय

में बसा लेना ही प्रभु-चरण-धूलि में स्नान करना है। गुरबाणी में सच्चे साधु की उपमा बारम्बार की गई है। उनकी शरण में नाम रूपी अमृत का खज़ाना मिलता है, जैसा कि चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है :

अंम्रितु नामु निधानु भोजनु खाइआ ॥
संत जना की धूरि मसतकि लाइआ ॥
नानक भए पुनीत हरि तीरथि नाइआ ॥
(पन्ना ६५२)

पंचम पातशाह ने अन्यत्र भी परिपूर्ण परमेश्वर में संत-जनों की चरण-धूलि की याचना की है :

कीमति कउणु करे तेरी करते प्रभ अंतु न पारावारी ॥
नाम दानु नानक वडिआई तेरिआ संत जना रेणारी ॥ *(पन्ना ९१६)*

इस प्रकार की विनती-याचना के फलस्वरूप उस अकाल पुरख की रहमत से जब जीव की अरदास प्रवान होती है तो उसे ऐसा गूढ़ा प्रेम-रंग चढ़ता है जो कभी भी मैला नहीं होता, जैसा कि श्री गुरु नानक देव जी ने फरमान किया है :

तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥ *(पन्ना ७२९)*

यह सब तभी मुमकिन है जब जीव को संत-जनों की संगत नसीब होती है।

मिरतक कउ जीवालनहार ॥
भूखे कउ देवत अधार ॥
सरब निधान जा की द्रिसटी माहि ॥
पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥
सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥
जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥
सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥
करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥
नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥

उपरोक्त पउड़ी के प्रारंभ की पंक्तियों में सर्वगुण-सम्पन्न परिपूर्ण परमेश्वर के गुणों का बखान किया गया है। अगली पंक्तियों में प्रभु-नाम की आराधना करने हेतु प्रेरित किया गया है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर मृतक को पुनः जीवित करने वाला है। भूखे को आधार (आसरा) देने वाला है। समस्त खज़ाने उसकी दृष्टि में हैं अर्थात् सब कुछ उसकी नज़र में है। उससे कुछ भी तो नहीं छिपा। सब कुछ उसके हाथ में है। फिर भी जीव अपने पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों को भोगते हैं। (दृश्यमान-अदृश्यमान) जगत में जो कुछ भी है वह सब कुछ अकाल पुरख का है और वह सब कुछ करने में समर्थ है। उसके बिना उस जैसा दूसरा न तो कोई हुआ है और न ही होगा। ऐसे परिपूर्ण परमेश्वर को दिन-रात जप अर्थात् श्वास-श्वास उस परमेश्वर का सिमरन कर। समस्त कार्यों में यह कार्य सर्वोत्तम है अर्थात् प्रभु का सिमरन ही सबसे ऊंचा और निर्मल-उज्जवल है, पवित्र है। अंतिम पंक्ति में श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि प्रभु रहमत करके जिस जीव को नाम बख़्शता है वह पवित्र हो जाता है।

पारब्रह्म परमेश्वर सुखों का निधान है। जो मृतकों को भी जीवन दान देने वाला है। उस मालिक के पास किसी भी पदार्थ की कोई कमी नहीं। जीवों के कर्मों के अनुसार ही उन्हें सुख-दुख एवं पदार्थों की प्राप्ति होती है। विचारणीय तथ्य यह है कि जहां रहमतों के सागर की बख़्शिश हो जाए वहां जीव के जन्म-जन्मांतरों के लेखे भी समाप्त हो जाते हैं। फिर

उस मालिक की दरगाह में जीव से कोई लेखा नहीं पूछता, जैसा कि पंचम पातशाह ने बाणी में अन्यत्र स्पष्ट किया है :

लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसंदा ॥
अनंदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥
(पन्ना १०९६)

ऐसे प्रताप वाला मालिक सर्वत्र समाया हुआ है एवं अनगिनत गुणों का मालिक है, सुखों की खान है :

सुख निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥
अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे ॥ (पन्ना ८०१)

जीव की प्रीति प्रभु-चरणों में लग जाती है; उसकी दुर्मति समाप्त हो जाती है और उसके हृदय घर में सदैव आनंद बना रहता है :

चरन कमल संगि लागी प्रीति ॥
बिसरि गई सभ दुरमति रीति ॥
मन तन अंतरि हरि हरि मंत ॥
नानक भगतन कै घरि सदा अनंद ॥
(पन्ना ८०२)

वस्तुत: निर्मल हृदय में ही प्रभु बसता है और जहां आनंद के भंडार का वास है वहां आनंद का कायम रहना स्वाभाविक है।

जा कै मनि गुर की परतीति ॥
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥
भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥
जा कै हिरदै एको होइ ॥
सचु करणी सचु ता की रहत ॥
सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥
साची द्रिसटि साचा आकारु ॥
सचु वरतै साचा पासारु ॥
पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥
नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥

पंद्रहवीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पातशाह ने समझाया है कि किस प्रकार पूर्ण गुरु एवं ईश्वर का प्रेम और विश्वास जीव को इस जगत में भक्त के रूप में प्रसिद्धि दिलवाता है और अंतत: जीव सत्य का व्यवहार करता हुआ सत्य में ही विलीन हो जाता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिस जीव के हृदय में सतिगुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा बन गई है, उसके हृदय में परमेश्वर की यादें बसी रहती हैं अर्थात् गुरु के पूर्ण विश्वास की बदौलत हृदय-घर में प्रभु का निवास हो जाता है। जिसके हृदय-घर से प्रभु पल भर के लिए भी विस्मृत नहीं होता ऐसा मनुष्य तीनों लोकों में भगत (भक्त) के रूप में विख्यात हो जाता है। जिसके हृदय में केवल एक हरि का ही वास होता है उसकी करनी और कथनी एक रूप हो जाती है। उसके हृदय में भी सच तथा मुख में भी सच का वास होता है अर्थात् सत्य स्वरूप परमेश्वर उसके हृदय में बसता है और उसके मुख से भी हरि-नाम का ही उच्चारण होता है। उसकी दृष्टि भी सच्ची अर्थात् पवित्र होती है और निर्मल दृष्टिगोचर होती है। आकार से तात्पर्य यह दृश्यमान जगत जो कि परमेश्वर द्वारा सृजित अर्थात् बनाया गया है। वह उसी हरि-सृजनकर्त्ता का ही रूप है। परमेश्वर ही सर्वत्र मौजूद है और इस सर्वव्यापकता का एहसास ऐसी निर्मल दृष्टि वाले को हर पल बना रहता है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जिस जीव ने (गुरु-कृपा से) परमेश्वर को सदा स्थिर रहने वाला समझा है वह उसी सत्य स्वरूप अकाल पुरख में ही समा जाता है अर्थात् लीन हो जाता है।

उपरोक्त पउड़ी की पहली पंक्ति में गुरु पातशाह ने सच्चे गुरु की महिमा पर प्रकाश डाला है। वस्तुत: उस पारब्रह्म परमेश्वर के अनंत गुणों का एहसास और विश्वास गुरु-कृपा

(शेष पृष्ठ ५४ पर)

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : १९

स. चंनण सिंघ

*-स. रूप सिंघ**

श्रीमान पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ जी के बाद गुरु-पंथ की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष के सम्मानित पद पर निरंतर दस वर्ष विराजमान होने वाली धड़ल्लेदार, दर्शनी सिक्ख शख़्सियत स. (संत) चंनण सिंघ का जन्म १९०७ ई. में स. तरलोक सिंघ तथा माता प्रेम कौर के घर गांव मुल्लांपुर, ज़िला लुधियाना में हुआ। इनके माता-पिता गुरु-घर में श्रद्धा-भावना रखने वाले श्रद्धालु सिक्ख थे। स. चंनण सिंघ दो भाई व चार बहनें थे। धार्मिक शिक्षा व अक्षर-ज्ञान इन्होंने गांव में निरमले संतों के डेरे से प्राप्त किया। अकाली लहर के समय जैतो के मोर्चे में शामिल हो रहे शहीदी जत्थे की स. चंनण सिंघ व आपके संगी-साथियों ने खूब टहल-सेवा की। आप जी को १९२८ ई. में आपकी बहन के पति का देहांत हो जाने के कारण मुल्लांपुर छोड़कर चक्क नं: १८-z, ज़िला श्री गंगानगर जाना पड़ा। अपनी बहन-बच्चों की देखभाल तथा सहायता हेतु आप जी निरंतर चार वर्ष वहीं रहे।

१९३२ ई. में स. चंनण सिंघ भारतीय सेना में भर्ती हो गए। इनको अपनी पल्टन के साथ कोलकाता जाना पड़ा; जहां पर ये सख़्त बीमार पड़ गए और कुछ महीने इनको अस्पताल में रहना पड़ा। इस बीमारी के कारण इनको सेना की सेवा का त्याग करना पड़ा। सैनिक सेवा त्यागकर ये अपने गांव मुल्लांपुर आ गए, जहां से ये फिर अपनी बहन के घर पहुंच गए। श्री गंगानगर के ही सेंट्रल गुरुद्वारे में इनका मिलाप स. (संत) फ़तहि सिंघ के साथ हुआ। यह ऐसा मिलाप था जो अंतिम सांसों तक निभ गया। इन्होंने स. फ़तहि सिंघ की संगत का आनंद लेने हेतु घर-बार त्याग दिया। इस समय इन्होंने गुरमति साहित्य का खूब अध्ययन किया। स. फ़तहि सिंघ का जीवन-मिशन गुरमति का प्रचार-प्रसार तथा विद्या का प्रसार करना था। स. फ़तहि सिंघ से इन्होंने कीर्तन की शिक्षा प्राप्त की तथा पूरे भारत के गुरुद्वारों में धर्म प्रचार के लिए प्रचार-भ्रमण किए। स. फ़तहि सिंघ को एक ऐसा संगी-साथी मिल गया जिस पर पूर्ण विश्वास तथा गर्व किया जा सकता था। आप जी उम्र में स. फ़तहि सिंघ से चार वर्ष बड़े थे किंतु हमेशा ही स. फ़तहि सिंघ का बुजुर्गों जैसा मान-सम्मान करते थे। वास्तव में स. फ़तहि सिंघ तथा आप जी एक ही सिक्के के दो पहलू थे।

शिरोमणि अकाली दल ने १९४९ ई. में पैप्सू सरकार के विरोध में मोर्चा लगाया तो आप जी ने अपने २० संगी-साथियों सहित गिरफ्तारी दी और आठ महीने जेल काटी। जेल से रिहा होने के उपरांत फिर दूसरे जत्थे सहित लुधियाना से गिरफ्तारी दी तथा मोर्चा सफल होने पर रिहा हुए। इनकी धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों को सम्मुख रखते हुए आप जी को शिरोमणि अकाली दल, ज़िला श्री गंगानगर के ज़िला जत्थेदार की सेवा १९५० ई. में सौंपी गयी तथा गुरुद्वारा श्री गुरू सिंघ सभा, श्री गंगानगर का मुख्य प्रबंधक नियुक्त किया गया। इन्होंने ये दोनों जिम्मेदारियां १९६२ ई. तक तन-मन से निरंतर निभाईं। इन जिम्मेदारियों से आप तभी मुक्त हुए जब आप जी को गुरु-पंथ की

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; मो. ९८१४६-३७९७९*

प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष पद पर विराजमान होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आप जी की लंबा समय शिरोमणि अकाली दल की कार्यकारिणी के सदस्य रहने के उपरांत १९५८-६० ई. में शिरोमणि अकाली दल के उपाध्यक्ष भी रहे। पंजाबी सूबा मोर्चा के समय भी इन्होंने अग्रणी भूमिका अदा की। ७ मार्च, १९६० ई. को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के वार्षिक जनरल समागम के समय आप जी श्री गंगानगर से शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य नामज़द हुए। इसी दिन स. फ़तहि सिंघ श्री गंगानगर से धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु. प्र. कमेटी) के सदस्य नामज़द किए गए। शिरोमणि अकाली दल १९६२ ई. में दो दलों में बंट गया। एक दल की नुमाइंदगी मास्टर तारा सिंघ जी करते थे और दूसरे दल की अगुआई स. फ़तहि सिंघ करते थे। २ अक्तूबर, १९६२ ई. को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल समागम के समय स. क्रिपाल सिंघ चक्क शेरेवाला के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पेश होने पर यह बहु-सम्मति से प्रवान हो गया। जत्थेबंदक चेतना, सेवा-सिमरन, सिक्खी-सिदक, भरोसा तथा सिक्ख संग्राम के लिए धड़ल्लेदार सिक्ख अगुआ स. चंनण सिंघ का नाम शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष पद के लिए 'संत दल' की तरफ से पेश किया गया जो बहु-सम्मति से प्रवान किया गया। इस तरह आप जी शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष की पदवी पर विराजमान हो गए। कार्यकारिणी के चुनाव के उपरांत शाम ६-३० बजे दोबारा जनरल एकत्रता स. चंनण सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की अध्यक्षता में हुई, जिसमें १४१ सदस्य हाज़िर थे। ३ अक्तूबर, १९६२ ई. को तीसरी बार जनरल एकत्रता बुलाई गई, जिसमें ज़रूरी विचारों के उपरांत सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड के नियम-उपनियम की रूप-रेखा तैयार की गयी तथा श्री ननकाणा साहिब एजूकेशन ट्रस्ट, लुधियाना के नये ट्रस्टी ५ वर्ष के लिए चुने गए।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का जनरल समागम ३ मार्च, १९६३ ई. को आप जी की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें वर्ष १९६३-६४ का बजट पास किया गया। इसी समय भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के देहांत पर शोक-प्रस्ताव पारित किया गया। १८ जून, १९६३ ई. को जनरल समागम के समय मास्टर तारा सिंघ जी के दल की तरफ से स. चंनण सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के विरुद्ध अविश्वास-प्रस्ताव पेश किया गया, जो १९ वोटों के फर्क से रद्द हो गया। २८ नवंबर, १९६३ ई. को वार्षिक जनरल इजलास स. चंनण सिंघ की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें १४० सदस्य हाज़िर थे। सबसे पहले पंथ के बेताज बादशाह बाबा खड़क सिंघ तथा डॉ. किचलू के देहावसान पर शोक-प्रस्ताव पारित किए गए। अध्यक्ष के चुनाव के समय आप जी फिर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष चुने गए। पहली जनवरी, १९६४ ई. को अध्यक्ष व कार्यकारिणी के विरुद्ध फिर अविश्वास-प्रस्ताव पेश किया गया। मतों की गिनती के समय ओहदेदारों तथा कार्यकारिणी पर विश्वास का मत हासिल कर लिया।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के वार्षिक चुनाव १८ अक्तूबर १९६४ ई.; १३ मार्च, १९६५ ई.; १८ नवंबर, १९६६ ई.; १७ नवंबर, १९६७ ई.; २७ अक्तूबर; १९६८ ई.; २९ नवंबर, १९६९ ई.; २६ नवंबर, १९७० ई.; १० अक्तूबर, १९७१ ई. तथा २३ अक्तूबर, १९७२ ई. को अध्यक्ष के पद पर निरंतर विराजमान होने का आप जी को सम्मान प्राप्त हुआ। आश्चर्य की बात है कि आप जी ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का एक भी जनरल चुनाव नहीं लड़ा तथा निरंतर नामज़द सदस्य के रूप में कार्यशील रहे। इनकी जत्थेबंदक विचार-शक्ति तथा प्रबंधक-योग्यता विलक्षण थी।

यादाश्त भी कमाल की थी। कहा जाता है कि इनको शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा शिरोमणि अकाली दल के वर्करों तक के नाम याद थे। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को स. चंनण सिंघ अपना परिवार समझते थे। कर्मचारियों के साथ इनकी सांझ, मुहब्बत तथा प्यार असीम था।

इनके लंबे कार्यकाल के समय हुए कार्यों को हम केवल सांकेतिक तथा संक्षिप्त रूप में ही रूपमान कर सकते हैं। तंबाकू व सिगरेटनोशी की मनाही, भारत सरकार को सिक्ख जज़्बातों की कद्र करने, गुरुद्वारा श्री पाउंटा साहिब के साके के बारे में हमदर्दी, माता गुजरी कॉलेज, श्री फ़तहिगढ़ साहिब का प्रबंध, जस्टिस स. हरनाम सिंघ के देहांत पर शोक; दुराहा व लुधियाना में हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अपमान के विरुद्ध प्रस्ताव, पंजाबी सूबा कायम करने के बारे में प्रस्ताव, सिक्खों के लिए 'श्री' की जगह 'सरदार' पदवी की प्रौढ़ता, गुरुपर्वों की छुट्टियां, पंजाबी बोली को अदालती जुबान बनाने, फौज में सिक्ख रहित मर्यादा कायम रखने, पाकिस्तान के गुरुद्वारों एवं प्रसिद्ध ऐतिहासिक यादगारों को कायम करने, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्यों के स्टेटस के बारे में, प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री के देहावसान पर अफसोस, पंजाबी सूबा मोर्चा के नेताओं के बारे में कांग्रेस वर्किंग कमेटी के फैसले की प्रशंसा, सिक्ख फौजियों की बहादुरी की प्रशंसा, धार्मिक स्थानों की जायदादों के बारे में कानूनी छूट की मांग, धार्मिक स्थानों की ज़मीनों की लिए मुज़ारा एक्ट से छूट, श्री दशमेश पिता के विदेश से आए पावन शस्त्रों, सिक्ख एजूकेशन सोसायटी के सदस्यों की नियुक्ति, श्री गुरु नानक देव जी का पांच सौ वर्षीय प्रकाश उत्सव मनाने के अधिकार, चंडीगढ़ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी निवास बनाने, गुरबाणी कानून की ज़रूरत, गुरुद्वारा श्री दमदमा साहिब को तख़्त करार देने, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रुमालों पर तसवीरें न छापने, टिकटों पर गुरु साहिबान की तसवीरें न छापने, पंजाबी सूबा हकूमत का स्वागत, श्री दशमेश पिता के तीन सौ वर्षीय प्रकाश पर्व के समय कैदियों को छूट, गुरुद्वारा एक्ट में संशोधन करने, सिक्ख राज्य के समय की शहीदी यादगारें, नानक सागर डैम के किसानों के प्रति सहानुभूति, मास्टर तारा सिंघ जी के अकाल चलाना कर जाने पर अफसोस, पंजाबी भाषा को भारत के अन्य राज्यों में राज्य-भाषा का दर्जा देने, तख़्त श्री हज़ूर, अबिचलनगर साहिब में सिक्ख रहित मर्यादा कायम रखने, बरतानवी सरकार द्वारा सिक्खों की दसतार पर लगाई पाबंदी, भाखड़ा डैम, चंडीगढ़ और पंजाबी बोलते इलाके वापिस लेने, पंजाब के बाहर सिक्खों पर हो रही ज्यादतियां दूर करवाने, श्री गुरु नानक देव जी के पांच सौ वर्षीय प्रकाश पर्व के समय श्री ननकाणा साहिब के खुले दर्शन तथा कैदियों की सज़ाओं की माफ़ी, कश्मीर गुरुद्वारा प्रबंध, स. दरशन सिंघ फेरूमान की शहीदी पर हमदर्दी का प्रस्ताव, तहसील फाज़िलका हरियाणा को देने के विरुद्ध, ढाका (पाकिस्तान) के समुद्री बाढ़-पीड़ितों की सहायता, जनगणना के समय मातृ-भाषा पंजाबी लिखवाने की अपील, हरियाणा गुरुद्वारा बोर्ड बनाने के विरुद्ध मुख्यमंत्री श्री बंसी लाल को चेतावनी, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्यों के अधिकार बढ़ाने, हिमाचल, हरियाणा तथा दिल्ली में पंजाबी को दूसरी भाषा का दर्जा देने की मांग, सिक्खी को पतितपुने से बचाने के लिए यत्न, बांग्ला देश की आज़ादी के संग्राम के बारे में हमदर्दी, गुरुद्वारा चुनाव करवाने, उत्तर प्रदेश में सिक्खों पर हुए जुल्म के विरुद्ध प्रस्ताव, मोगा के निर्दोष विद्यार्थियों के बारे में हमदर्दी आदि महत्त्वपूर्ण फैसले तथा प्रस्ताव स. चंनण सिंघ के अध्यक्ष के समय

पारित हुए।

गुरदासपुर की लोक सभा सीट के चुनाव के समय स. फ़तहि सिंघ की राय थी कि चुनाव शिरोमणि अकाली दल द्वारा न लड़ा जाए परंतु आप जी चुनाव लड़ने के हक में थे। चुनाव लड़ा गया तथा शिरोमणि अकाली दल का उम्मीदवार हार गया, जिस कारण अकाली दल के सम्मान को भारी ठेस पहुंची। स. फ़तहि सिंघ ने चुनाव लड़ने और हारने का दोषी स. चंनण सिंघ को मानते हुए काफी कोसा। स. चंनण सिंघ, स. फ़तहि सिंघ के गुस्से को बर्दाश्त न कर सके। आख़िर इनको दिल का गंभीर दौरा पड़ गया। होश आने पर एक ही बात पुकारते रहे-- "मुझसे भूल हो गयी! मेरे साथ 'बड़े संत' (स. फ़तहि सिंघ) नाराज़ हो गए। बाबा जी! मुझे माफ कर दो।" इनके बीमार होने पर स. फ़तहि सिंघ विशेष रूप से बुड्ढा जौहड़ पहुंचे और कहा, "भाई! गुरु-पंथ की सेवा करना हमारा फर्ज़ है। एक चुनाव हारे हैं, कई जीते भी हैं।" इतना कहने से ये कुछ समय बाद ठीक हो गए।

३० अक्तूबर, १९७२ ई को स. फ़तहि सिंघ अकाल चलाना कर गए। ठीक एक महीने बाद स. चंनण सिंघ भी २९ नवंबर, १९७२ ई को रात के १२ बजकर १० मिनट पर इस नाशमान संसार को अंतिम फ़तहि बुला गए। इनकी जगह जत्थेदार गुरचरण सिंघ 'टौहड़ा', अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी चुने गए। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल समागम ३१ मार्च, १९७३ ई तथा धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु. प्र. कमेटी), श्री अमृतसर के प्रस्ताव संख्या २४८३, १६ जनवरी, १९७३ ई द्वारा स. चंनण सिंघ को श्रद्धा, सत्कार तथा श्रद्धांजलि भेंट की गई। इनकी तसवीर केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय, श्री अमृतसर में सुशोभित है। इनकी याद में 'संत चंनण सिंघ कलोनी' श्री अमृतसर में बनायी गयी है। 

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

(पृष्ठ ५० का शेष)

से ही मुमकिन है, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी गुरु-महिमा का गायन कर उसे प्रभु-प्राप्ति का साधन व साध्य बताया है और साथ ही उसे पारब्रह्म परमेश्वर का ही साक्षात रूप माना है :

गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सरु ॥
ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥
(पन्ना ३९७)

गुरबाणी में सदा स्थिर परमेश्वर ही हृदय में बसाकर रखने की प्रेरणा बारम्बार दी गई है। उपरोक्त पउड़ी में इसी भाव की व्यंजना है। अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं :

जो न ढहंदो मूलि सो घरु रासि करि ॥
हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥
(पन्ना ३९७)

आओ! हम भी हृदय से गुरबाणी आशयानुसार परवरदिगार के चरणों में जुड़कर अनुनय-विनय (अरदास) करें :

आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं ॥
जीवां तेरी दाति किरपा करहु मूं ॥ (पन्ना ३९७)

परमेश्वर एवं गुरु रहमतों के खज़ाने हैं, कृपालु हैं, दयालु हैं। उनके खज़ाने में किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं पर अफसोस कि हमें मांगने का ढंग ही नहीं आता। एक शायर ने क्या खूब लिखा है :

मोहताज है यह सारा जमाना उसका।
कतरे उसके, दाना-दाना उसका।
अफसोस कि मांगना न आया तुझको,
जारी है हर वक्त खज़ाना उसका। 

ख़बरनामा

श्री अकाल तख़्त साहिब से जारी हुकमनामे की उल्लंघना करने वाले भी तनखाहिए समझे जाएंगे-ज्ञानी गुरबचन सिंघ

श्री अमृतसर : २१ फरवरी : श्री अकाल तख़्त साहिब से रागी दर्शन सिंघ को तनखाहिया करार दिए जाने के बारे में हुए हुकमनामे का उल्लंघन करने वाले भी तनखाहिए समझे जाएंगे। इन शब्दों का प्रकटावा श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने किया।

कार्यालय शिरोमणि गु प्र कमेटी से जारी प्रेस विज्ञप्ति में सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि श्री अकाल तख़्त साहिब से रागी दर्शन सिंघ को तनखाहिया करार दिया गया है, परंतु कुछ कथित जत्थेबंदियां श्री अकाल तख़्त साहिब से जारी हुकमनामे की जान-बूझकर उल्लंघना कर रही हैं तथा रागी दर्शन सिंघ से कीर्तन करवा रही हैं। उन्होंने कहा कि श्री अकाल तख़्त साहिब से हुए हुकमनामे में स्पष्ट शब्दों में लिखा गया है कि जब तक रागी दर्शन सिंघ अपनी भूल नहीं बख़्शवा लेता, उतनी देर तक इस व्यक्ति से किसी प्रकार की कोई सांझेदारी न रखी जाए। कुछ अहंकारी लोग झूठी शोहरत के बदले श्री अकाल तख़्त साहिब से जारी इस हुकमनामे का उल्लंघन कर रहे हैं, जो कदाचित बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सिंघ साहिब ने कहा कि जो भी सभा-सोसायटियां, प्रबंधक कमेटियां श्री अकाल तख़्त साहिब से जारी हुकमनामे का उल्लंघन करेंगी, उनका भी श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा पूर्ण रूप से बहिष्कार किया जाएगा तथा उनको किसी प्रकार का कोई समर्थन आदि नहीं दिया जाएगा।

हिंडूजा ग्रुप ऑफ कंपनी द्वारा ट्रक भेंट किया गया

श्री अमृतसर : ३ मार्च : हिंडूजा ग्रुप ऑफ कंपनी द्वारा अशोका लेलैंड १११२ **LE Boss** मॉडल वाला पहला ट्रक श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर को भेंट किया गया, जिसकी चाबियां कंपनी के मैनेज़िंग डायरेक्टर श्री विनोद के. दासरी तथा श्री राजीव सहारिया, हेड ट्रक्स एवं अशोक लेलैंड ग्लोब ऑटो पार्ट्स के मैनेज़िंग डायरेक्टर स. जगजीत सिंघ (सेठी) ने जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सौंपी।

कंपनी अधिकारियों ने कहा कि श्री गुरु रामदास जी पातशाह का आशीर्वाद लेने के लिए हिंडूजा ग्रुप ऑफ कंपनी द्वारा आए इस नए मॉडल वाला ट्रक सेवा रूप में भेंट किया गया है। उन्होंने कहा कि हम लोग भाग्यशाली हैं कि श्री गुरु रामदास जी पातशाह ने हमसे ऐसी सेवा ली है।

इस अवसर पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि श्री विनोद के. दासरी तथा उसका सारा परिवार गुरु-घर का परम श्रद्धालु है। उन्होंने कहा कि इन पर परमात्मा की अति कृपा हुई है जो इनको यह शुभ सेवा प्राप्त हुई है। उन्होंने कंपनी के सभी अधिकारियों का स्वागत करते हुए उनको श्री हरिमंदर साहिब का मॉडल, सिरोपा एवं धार्मिक पुस्तकों का सेट देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर स. खुशविंदर सिंघ तथा स. बावा सिंघ गुमानपुरा, सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी; स. रूप सिंघ तथा स. मनजीत सिंघ सचिव; स. दिलजीत सिंघ, बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा तथा स. परमजीत सिंघ अपर सचिव और श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. प्रताप सिंघ के अलावा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संवत् ५४६ का नानकशाही कैलंडर जारी

श्री अमृतसर : ११ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी की ओर से प्रकाशित संवत् ५४६ (सन् २०१४-१५) का नानकशाही कलैडंर श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर के सचिवालय से जारी किया।

इस अवसर पर ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने समूह सिक्ख संगत को १४ मार्च से शुरू हो रहे नानकशाही नववर्ष की मुबारकवाद देते हुए कहा कि नानकशाही कैलंडर में संशोधन हेतु विभिन्न जत्थेबंदियों, सभा-सोसायटियों आदि की ओर से पहुंचे सुझाव अभी विचाराधीन हैं। उन्होंने कहा कि जब तक सर्वसम्मति से कोई अंतिम निर्णय नहीं ले लिया जाता तब तक सारी सिक्ख संगत इसी कैलंडर के अनुसार गुरुपर्व एवं ऐतिहासिक दिवस मनाए।

कैलंडर जारी करते समय शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य भाई मनजीत सिंघ के अलावा स. दलमेघ सिंघ सचिव, स. रूप सिंघ सचिव, स. मनजीत सिंघ सचिव, स. सतबीर सिंघ सचिव (धर्म प्रचार कमेटी), स. दिलजीत सिंघ अपर सचिव, स. अंग्रेज सिंघ अपर सचिव, स. परमजीत सिंघ अपर सचिव तथा स. प्रताप सिंघ, मैनेजर श्री दरबार साहिब उपस्थित थे।

धर्म प्रचार कमेटी द्वारा नशा-मुक्ति लहर आरंभ

श्री अमृतसर : १२ मार्च : सिक्ख पंथ की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ के नेतृत्व में सिक्खी के प्रचार एवं प्रसार को और गतिशील बनाने के लिए तथा पंजाब में नशों के सेवन पर रोकथाम लगाने के लिए धर्म प्रचार कमेटी द्वारा गत दिवस गुरुद्वारा श्री फ़तहिगढ़ साहिब से नशा-मुक्ति लहर की आरंभता की गई जिसे जत्थेदार अवतार सिंघ ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. सतबीर सिंघ ने जानकारी देते हुए बताया कि नशा-मुक्ति लहर को निरंतर रूप से चलाने के लिए धर्म प्रचार कमेटी के समूह प्रचारक साहिबान की ड्यूटी लगाई गई है। उन्होंने बताया कि इस लहर की निगरानी धर्म प्रचार कमेटी के उप सचिव स. संतोख सिंघ को सौंपी गई है। उन्होंने कहा कि इस लहर के तहत शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रत्येक सदस्य के क्षेत्र से ५०-५० गांवों का चयन किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इस लहर को सफल बनाने के लिए घर-घर तक पहुंच की जाएगी। जो लोग नशों का सेवन करते होंगे उनको संगत रूप में एकत्र करके गुरमति विचारों से अवगत कराया जाएगा तथा ऐसे लोगों की मानसिक एवं आर्थिक स्थिति का विवरण भी तैयार होगा। उन्होंने कहा कि इस लहर के दौरान स्कूलों- कॉलेजों के विद्यार्थियों के साथ भी संपर्क स्थापित किया जाएगा तथा उन्हें भी नशा-रहित जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जाएगा। 

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०४-२०१४